mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-81 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

25 मार्च 2025 मंगलवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

पैरालंपियन शीतल ...

@ पेज 7

सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम ने जस्टिस वर्मा को इलाहाबाद हाई कोर्ट भेजने की सिफारिश

नई दिल्ली (एजेंसी)। जस्टिस यशवंत वर्मा को लेकर सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम ने सोमवार को एक बैठक की। इस बैठक के बाद कोलेजियम ने जस्टिस यशवंत वर्मा को इलाहाबाद हाई कोर्ट भेजने के फैसले का

● इलाहाबाद हाई कोर्ट बार एसो. ने न भेजने की अपील की

समर्थन किया। हालांकि, इलाहाबाद हाई कोर्ट बार एसोसिएशन की जनरल बॉडी की मीटिंग के बाद सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से अपील की गई है कि जस्टिस यशवंत वर्मा को इलाहाबाद हाई कोर्ट न भेजा जाए। दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं। सोमवार को लाइब्रेरी हॉल में इलाहाबाद हाई कोर्ट बार एसोसिएशन की जनरल बॉडी की मीटिंग हुई। इस मीटिंग में 11 प्रस्ताव पास किए गए। हाई कोर्ट बार एसोसिएशन ने प्रस्ताव पास कर सीजेआई से मांग की है कि जस्टिस यशवंत वर्मा का इलाहाबाद हाई कोर्ट तबादला ना किया जाए। बार एसोसिएशन ने कहा है कि इलाहाबाद हाईकोर्ट डंपिंग ग्राउंड नहीं है। इसके साथ ही बार एसोसिएशन ने केंद्र सरकार और सीजेआई से जस्टिस यशवंत वर्मा के खिलाफ महाभियोग लाए जाने की मांग की है। जनरल बॉडी मीटिंग में प्रस्ताव पास किया गया है कि जस्टिस यशवंत वर्मा के खिलाफ सीबीआई और ईडी को केस रजिस्टर करने की इजाजत दी जानी चाहिए। जिस प्रकार से एक सिविल सर्वेंट, पब्लिक सर्वेंट या राजनेता का ट्रायल होता है,उसी तरह उनके केस का ट्रायल भी होना चाहिए। बार एसोसिएशन ने सुप्रीम कोर्ट की आंतरिक जांच को खारिज करते हुए मांग की है कि अगर जरूरत पड़े तो जस्टिस यशवंत वर्मा को सीजेआई की अनुमति से कस्टडी में लिया जाए। बार एसोसिएशन ने जस्टिस जसवंत वर्मा की सारी दलीलों और सफाई को खारिज कर दिया है। बार एसोसिएशन ने ÷अंकल जज सिंड्रोम÷ का भी मामला उठाया है। वकीलों ने अंकल जज सिंड्रोम के खिलाफ भी कार्रवाई की मांग की है। इसके तहत जिस अदालत में कोई जज हो उसके परिवार के लोग वहां पर वकालत ना करें। बार एसोसिएशन ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में जजों के खाली पदों को भरने, जस्टिस यशवंत वर्मा के फैसलों की समीक्षा, मांग की है।

हड़ताल पर गए वकील: हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष सीनियर एडवोकेट अनिल तिवारी की अध्यक्षता में जनरल बॉडी मीटिंग हुई, जिसमें 11 प्रस्ताव पास किए गए। सोमवार को लंच के बाद सांकेतिक रूप से इलाहाबाद हाई कोर्ट के वकील हड़ताल पर चले गए हैं। बार की बैठक में निर्णय लिया गया कि इलाहाबाद हाई कोर्ट के वकील कल से हड़ताल पर रहेंगे और सड़क पर भी विरोध प्रदर्शन करेंगे। बार ने कहा है कि जस्टिस यशवंत वर्मा के इलाहाबाद और दिल्ली हाईकोर्ट में सुनाए गए फैसलों की जांच की जानी चाहिए ताकि न्यायपालिका पर लोगों का भरोसा बना रहे।

संक्षिप्त समाचार

अमेरिकी और रूसी वार्ताकारों के बीच शुरू हुई वार्ता

कीव (एजेंसी)। अमेरिकी और रूसी वार्ताकारों के बीच सोमवार को यूक्रेन में आंशिक युद्ध विराम को लेकर वार्ता सऊदी अरब में शुरू हो गई। रूसी समाचार खबरों से यह जानकारी सामने आई है। यह वार्ता, अमेरिका और यूक्रेन के प्रतिनिधिमंडल के बीच वार्ता के एक दौर के कुछ घंटों बाद शुरू हुई है। सरकारी समाचार एजेंसी 'तास' और 'आरआईए-नोवोस्ती' की खबर के मुताबिक, वार्ता राजधानी रियाद में शुरू हुई और इस बैठक के बाद अमेरिका और यूक्रेन के दलों के बीच एक बार और बैठक होने की संभावना है। खबर में बताया गया कि अलग-अलग बैठकों में ऊर्जा संयंत्रों और नागरिक

अवसंरचना पर रूस और यूक्रेन दोनों की ओर से लंबी दूरी के हमलों पर विराम के विवरण पर चर्चा की जाएगी। साथ ही सुरक्षित वाणिज्यिक समुद्री परिवहन सुनिश्चित करने के लिए काला सागर में हमलों पर रोक लगाने को लेकर भी चर्चा की जाएगी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से बात करने के बाद यूक्रेन और रूस ने बुधवार को सीमित युद्ध विराम पर सैद्धांतिक रूप से सहमति जताई थी, लेकिन दोनों पक्षों ने इस बात पर अलग-अलग विचार व्यक्त किए थे कि किन ठिकानों पर हमला करना प्रतिबंधित होगा। दोनों देशों ने एक-दूसरे पर युद्ध विराम समझौते पर पहुंचने के प्रयासों को कमजोर करने का आरोप भी लगाया है। व्हाइट हाउस ने 'ऊर्जा और आधारभूत संरचना' पर हमले पर रोक लगाने की बात कही थी, लेकिन क्रेमलिन ने समझौते में सिर्फ ऊर्जा अवसंरचना को ही जगह दी। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने कहा कि वह रेलवे और बंदरगाहों की सुरक्षा भी चाहेंगे। जेलेंस्की ने टेलीविजन पर दिए गए एक बयान में कहा कि 11 मार्च से ही बिना शर्त युद्ध विराम का प्रस्ताव विचाराधीन है और हमले पहले ही बंद हो सकते थे, लेकिन रूस ने यह सब जारी रखा है।

अमेरिका जाना अब छात्रों के लिए नहीं रहा आसान

अमेरिका (एजेंसी)। छात्रों के लिए अब अमेरिका जाना आसान नहीं रह गया है। अमेरिका लगातार अधिक संख्या में छात्र वीजा को रिजेक्ट कर रहा है। यह संख्या पिछले एक दशक में उच्चतम स्तर पर है। अमेरिका ने पिछले वित्तीय वर्ष (अक्टूबर 2023 से सितंबर 2024) में सभी देशों से 41 प्रतिशत एफ-1 वीजा आवेदनों को अस्वीकार कर दिया है। यह आंकड़ा दर्शाता है कि अब अमेरिका का वीजा प्राप्त करना पहले की तुलना में अधिक कठिन हो गया है। द इंडियन एक्सप्रेस ने अमेरिका के स्टेट डिपार्टमेंट डेटा का विश्लेषण किया है। 2023-24 में अमेरिका को एफ-1 वीजा के लिए कुल 6.79 लाख आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से 2.79 लाख (41 प्रतिशत) को अस्वीकार कर दिया गया। वहीं 2022-23 में कुल

6.99 लाख में से 2.53 लाख आवेदन (36 प्रतिशत) को अस्वीकार कर दिया गया था। हालांकि, अमेरिकी विदेश विभाग ने एफ-1 वीजा के लिए देशवार अस्वीकृति दर के आंकड़े शेयर नहीं किए हैं। एफ-1 वीजा अमेरिका में शैक्षणिक संस्थानों में पढ़ने वाले छात्रों के लिए एक गैर-आप्रवासी श्रेणी है, जबकि एम-1 वीजा व्यावसायिक और गैर-शैक्षणिक कार्यक्रमों को कवर करता है। इंडियन एक्सप्रेस के विश्लेषण में एफ-1 वीजा पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जो सालाना अमेरिकी छात्र वीजा का 90 प्रतिशत से अधिक हिस्सा है। इंडियन एक्सप्रेस ने पिछले साल 9 दिसंबर को बताया था कि 2024 के पहले 9 महीनों में भारतीयों को जारी किए गए छात्र वीजा की संख्या 2023 की इसी अवधि की तुलना में 38 फीसदी कम हो गई थी। आंकड़ों के अनुसार पिछले दशक में सभी देशों से आवेदनों की कुल संख्या में गिरावट के बावजूद छात्र वीजा अस्वीकृत होने का प्रतिशत बढ़ा है। 2014-15 में आवेदनों की कुल संख्या 8.56 लाख पर पहुंच गई, लेकिन अगले कुछ वर्षों में इसमें लगातार गिरावट देखी गई।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन में एक बार फिर भगदड़ जैसे हालात

रायचूर (एजेंसी)। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर एक बार फिर रविवार शाम को भारी भीड़ बढ़ गई। कुछ ट्रेनों के कैंसल होने की वजह से ऐसी स्थिति बनी। दिल्ली पुलिस भगदड़ जैसी स्थिति बता रही है लेकिन रेलवे इससे इंकार कर रहा है। दिल्ली पुलिस ने ये भी कहा कि कुछ ट्रेनों के निकलने के बाद में स्थिति सुधार ली गई। दिल्ली पुलिस ने कहा कि शिव गंगा एक्सप्रेस, स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस, जम्मू राजधानी एक्सप्रेस, लखनऊ मेल और मगध एक्सप्रेस के प्रस्थान में देरी के कारण नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 12 और 13 पर बड़ी संख्या में यात्री जमा हो गए थे। इसके साथ ही दिल्ली पुलिस ने कहा कि ट्रेनों के देरी के कारण प्लेटफार्मों पर यात्रियों की भारी भीड़ देखी गई। स्थिति अराजक हो गई और भगदड़ जैसा माहौल बन गया, जो पिछले महाकुंभ व्यवस्थाओं के दौरान देखी गई भीड़ प्रबंधन चुनौतियों जैसा था। किसी भी अप्रिय घटना से बचने के लिए भीड़ नियंत्रण के आवश्यक उपाय तुरंत किए जाने चाहिए।

खीर सेरेमनी से हुई सत्र की शुरुआत

दिल्ली विधानसभा में आज पेश होगा बजट, सीएम कर सकती हैं बड़े ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली का बजट सत्र आज सोमवार 24 मार्च 2025 से शुरू हो गया है। बता दें कि बजट सत्र की शुरुआत सोमवार से हुई है, वहीं, विधानसभा में बजट मंगलवार 25 मार्च को पेश किया जाएगा। दिल्ली विधानसभा का ये बजट सत्र 24 से 28 मार्च तक चलेगा। दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी की नई सरकार में वित्त विभाग का प्रभार मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ही संभाल रही है। आइए जानते हैं कि इस बजट सत्र के पहले दिन क्या होगा और विधानसभा में पेश होने वाले बजट में सीएम रेखा गुप्ता कौन से ऐलान कर सकती हैं।

दिल्ली विधानसभा का बजट सत्र 24 से 28 मार्च तक चलेगा। इस सत्र की शुरुआत सुबह 9 बजे खीर सेरेमनी से हुई। सीएम रेखा गुप्ता ने सबको खीर खिलाकर बजट सत्र की शुरुआत की। आज विधानसभा में डीटीसी पर सीएजी की रिपोर्ट भी पेश की जाएगी। इसके अलावा 10 बजे आम आदमी पार्टी

महिला सम्मान योजना अभी तक नहीं शुरू करने के लेकर प्रोटेस्ट करेगी। विधानसभा में 27 मार्च को प्रस्तावित बजट पर चर्चा के साथ उसे पारित किया जाएगा। दिल्ली के बजट को लेकर प्रदेश की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा है कि भाजपा सरकार का वित्त वर्ष 2025-26 का बजट महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण, बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा, बेहतर बुनियादी ढांचे, प्रदूषण नियंत्रण और जलनिकास पर केंद्रित होगा। रेखा गुप्ता ने कहा है कि बजट में जनता की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने पर ध्यान दिया जाएगा और इसमें रोजगार सृजन के प्रावधान होंगे। सीएम ने बताया है कि सरकार ये सुनिश्चित करेगी की बजट प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित दिल्ली के सपने को पूरा करे।

महिला समृद्धि योजना पर हो सकता है ऐलान: इन सब के अलावा दिल्ली विधानसभा के बजट सत्र में महिला समृद्धि योजना को लेकर भी खास ऐलान हो सकता है। बता दें कि चुनाव से पहले भाजपा ने वादा किया था कि इस तहत गरीब परिवारों की महिलाओं को हर महीने 2,500 रुपये मिलेंगे।

घूमने के लिये स्कूल से भागीं 4 छात्रायें

हिसार (एजेंसी)। हरियाणा के हिसार स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय की चार छात्राओं को जयपुर घूमने का ऐसा शौक चढ़ा कि वे बिना किसी को बताए स्कूल से निकल पड़ीं। हालांकि, किस्मत ने उनका साथ नहीं दिया और वे गलत ट्रेन में बैठकर राजस्थान के चूरू पहुंच गईं। गनीमत रही कि समय रहते रेलवे पुलिस और चाइल्ड हेल्पलाइन टीम ने उन्हें सुरक्षित दस्तयाब कर लिया। जानकारी के अनुसार, छात्राओं की उम्र 12 से 13 वर्ष के बीच है। उन्होंने स्कूल से भागने का प्लान बनाया और 24 किलोमीटर का सफर पैदल तय कर हिसार रेलवे स्टेशन पहुंच गईं। यहां उन्होंने जयपुर जाने वाली ट्रेन की जगह गलती से जोधपुर-हिसार ट्रेन पकड़ ली, जिससे वे सीधे चूरू पहुंच गईं। चूरू रेलवे स्टेशन पर जब रेलवे पुलिस की नजर इन चार नाबालिग छात्राओं पर पड़ी तो उन्हें संदेह हुआ। पूछताछ में छात्राएं कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दे सकीं, जिसके बाद रेलवे पुलिस ने तुरंत चाइल्ड हेल्पलाइन को सूचना दी। चाइल्ड हेल्पलाइन ने चारों छात्राओं को अपनी देख-रेख में लेकर बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत किया।

राहुल गांधी की ब्रिटिश नागरिक मामले की सुनवाई 21 अप्रैल को

हाईकोर्ट ने अनुरोध खारिज करते हुए चार हफ्तों का समय दिया

इलाहाबाद (एजेंसी)। इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ बेंच ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की नागरिकता के मुद्दे पर निर्णय लेने के लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय को 4 हफ्ते का समय दिया है। गृह मंत्रालय ने राहुल गांधी की नागरिकता को लेकर रिपोर्ट देने के लिए आठ हफ्ते का समय मांगा था, लेकिन हाईकोर्ट ने अनुरोध खारिज करते हुए चार हफ्तों का समय दिया है। इस मामले की अगली सुनवाई 21 अप्रैल को होगी। बता दें कि पिछले कई वर्षों से राहुल गांधी की नागरिकता को लेकर सवाल उठाए जा रहे हैं और लोगों के बीच यह चर्चा का विषय रहा है। याचिका इस दावे के आधार पर दाखिल हुई थी कि राहुल गांधी भारत के साथ-साथ ब्रिटेन के भी नागरिक हैं, ऐसे में वह संविधान के अनुच्छेद 84(ए) के तहत चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य हैं। लिहाजा, उनकी सांसदी रद्द की जानी चाहिए।

दरअसल, 1 जुलाई 2024 को कर्नाटक के वकील और बीजेपी सदस्य एस विग्नेश शिशिर ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की थी। इसमें उन्होंने राहुल गांधी के पास ब्रिटिश नागरिकता होने का भी आरोप लगाया था। याचिकाकर्ता ने ब्रिटिश सरकार के 2022 के गोपनीय मेल का हवाला देते हुए यह

आरोप लगाया था। विग्नेश शिशिर ने भारतीय नागरिकता अधिनियम 1955 की धारा 9(2) के तहत राहुल गांधी की भारतीय नागरिकता रद्द करने की मांग की थी।

याचिकाकर्ता के पास हैं ब्रिटिश सरकार के दस्तावेज इस याचिका में राहुल की ब्रिटिश नागरिकता को कथित तौर पर छुपाने के कारण इसी साल रायबरेली लोकसभा सीट से उनके निर्वाचन को रद्द करने का अनुरोध किया गया है। याचिकाकर्ता ने दलील दी है कि उसके पास ब्रिटिश सरकार के सभी दस्तावेज और कुछ ईमेल हैं जो साबित करते हैं कि राहुल गांधी ब्रिटिश नागरिक हैं और इस वजह से वह भारत में चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य हैं। लिहाजा वह लोकसभा सदस्य का पद नहीं संभाल सकते।

ओडिशा में सोने की खोज से अर्थव्यवस्था होगी मजबूत

ओडिशा के खनन मंत्री ने विधानसभा में की इसकी पुष्टि

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओडिशा जल्द ही भारत के सोने के खनन उद्योग में एक बड़ा नाम बन सकता है। राज्य के कई जिलों में सोने के भंडार पाए गए हैं, जिससे यह क्षेत्र तेजी से खनन के लिए तैयार हो रहा है। ओडिशा के खनन मंत्री विभूति भूषण जेना ने विधानसभा में इसकी पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि सोने की खोज से राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और रोजगार के नए अवसर भी पैदा होंगे।

इन जिलों में मिले सोने के भंडारम: सुंदरगढ़, नबरंगपुर, अंगुल और कोरापुट जिलों में सोने के बड़े भंडार पाए गए हैं। इसके अलावा, मलकानगिरी, संबलपुर और बौध जिलों में भी सोने की मौजूदगी के संकेत मिले हैं। इन खोजों से ओडिशा को भारत के सबसे समृद्ध खनिज क्षेत्रों में शामिल होने का अवसर मिल रहा है। मयूरभंज जिले में भी सोने के कई स्थानों की पहचान की गई है, जिनमें जशिपुर, सूरियागुडा, रुआंसी, इडेलकुचा, मारेदिही, सुलेपत और बादामपहाड़ शामिल हैं। इससे पहले, देवगढ़ जिले के अदासा-रामपल्ली

क्षेत्र में तांबे की खोज के दौरान सोने का पता चला था। क्योंझर जिले के गोपुर-गाज़ीपुर, मंकडचुआं, सालेकाना और दिमिरीमुंडा क्षेत्रों में भी सोने की खोज जारी है।

ओडिशा सरकार ने देवगढ़ जिले में अपने पहले सोने के खनन ब्लॉक की नीलामी की योजना बनाई है, जिससे राज्य के खनन क्षेत्र को बड़ा बढ़ावा मिलेगा। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण और ओडिशा खनन निगम इन नए स्थानों की जांच कर रहे हैं ताकि यह तय किया जा सके कि सोना निकालना कितना संभव है। तकनीकी समितियां व्यावसायिक खनन शुरू करने से पहले अंतिम रिपोर्टों की समीक्षा कर रही हैं। मयूरभंज के जशिपुर, सूरियागुडा और बादामपहाड़ में शुरुआती सर्वेक्षण किए जा रहे हैं।

दिल्ली-यूपी सहित मैदानी इलाकों में तेज गर्मी के आसार

अगले दो दिनों में तापमान में बढ़ोत्तरी होने की संभावना

बेंगलुरु (एजेंसी)। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार दिल्ली और यूपी सहित उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में अगले दो दिन तक तेज गर्मी पड़ने के आसार हैं। आईएमडी ने बताया कि अगले दो दिनों में उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में तापमान 2-3 डिग्री तक बढ़ सकता है। हालांकि, इसके बाद कुछ दिनों के लिए राहत मिलने के आसार हैं। हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, मध्य प्रदेश और बिहार के कुछ हिस्सों में भी गर्मी बढ़ सकती है। दिल्ली में रविवार को अधिकतम तापमान 34 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो मौसम के औसत तापमान से 2.8 डिग्री ज्यादा है। अगले दो दिनों में इसमें बढ़ोत्तरी होने की संभावना है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार एक ताजा पश्चिमी विक्षोभ सोमवार रात से पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र को प्रभावित कर सकता है, लेकिन मैदानी इलाकों के तापमान पर इसका ज्यादा असर नहीं होगा। अगले चार

दिनों में उत्तर प्रदेश में तापमान 4-6 डिग्री सेल्सियस बढ़ने की संभावना है।

25-27 मार्च को जम्मू, कश्मीर, लद्दाख, गिलगित बाल्टिस्तान, मुजफ्फराबाद क्षेत्र में हल्की बारिश हो सकती है। वहीं, 26 मार्च को इन जगहों पर भारी बारिश या बर्फबारी भी हो सकती है। 25-27 मार्च को हिमाचल प्रदेश में और 26-27 मार्च को उत्तराखंड में गरज और बिजली के साथ हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है।

पहाड़ों पर होगा पश्चिमी विक्षोभ का असर स्काईमेट वेदर में जलवायु और मौसम विज्ञान के उपाध्यक्ष महेश पलावत ने कहा, ÷हालात बहुत शुष्क हैं। एक पश्चिमी विक्षोभ आ रहा है, लेकिन इसका प्रभाव पहाड़ों तक ही सीमित रहेगा। बादल रहित आसमान और सीधी धूप के कारण उत्तर-पश्चिम भारत, खासकर मैदानी इलाकों में अधिकतम और न्यूनतम तापमान बढ़ने की उम्मीद है। हवाएं भी दक्षिण-पश्चिमी होने की उम्मीद है। पश्चिमी विक्षोभ के गुजर जाने के बाद हम तापमान में बहुत ज्यादा गिरावट की उम्मीद नहीं कर सकते। 27 मार्च के बाद तापमान में मामूली गिरावट हो सकती है।÷

पलावत ने कहा, ÷दिल्ली और आसपास के इलाकों में अधिकतम तापमान भी 30 डिग्री तक पहुंचने की उम्मीद है।÷ रविवार को दिल्ली में न्यूनतम तापमान 15 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि यहां आर्द्रता का स्तर 67 से 24 प्रतिशत के बीच रहा। मौसम विभाग ने सोमवार को आसमान साफ ??रहने के साथ अधिकतम तापमान के 34 डिग्री सेल्सियस पहुंचने, जबकि न्यूनतम तापमान के 17 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना जताई है।

पिता के गले में रस्सी बांधकर फांसी में लटकाने की कोशिश

सागर (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के सागर जिले की बंडा विधानसभा के जमुनिया गांव से हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। जहां एक कलयुगी बेटा अपने ही पिता की जान लेने में उतारू हो गया। पिता मुन्ना सिंह लोधी के गली में रस्सी बांधकर फांसी लगाकर मारने की कोशिश करते हुए देखा। जमुनिया गांव का रहने वाला संजय लोधी शराब का आदि है। शराब पीकर आए दिन अपने घरवालों के साथ गाली-गलौज करता है। रविवार को संजय शराब पीकर अपने घर पहुंचा तो उसने पहले अपने घरवालों के साथ गाली-गलौज की। गुस्से में आकर उसने रस्सी उठाई और अपने पिता मुन्ना लोधी के गली में लपेट दी और फांसी लगाने की कोशिश करने लगा। इस दौरान पास में खड़ा एक व्यक्ती और उसकी मां ऐसा करने से उसे रोकती है। शराब के नसे में धुत कलयुगी बेटा संजय अपने पिता के गले में रस्सी का फंदा लगाने की कोशिश में लगा रहा। कलयुगी बेटे की इस करतूत से परिवार के बाकी लोग सहम गए। पिता को फांसी पर लटकाए जाने की घटना का वीडियो मोबाइल से किसी ने बना लिया। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म में ये वीडियो वायरल हो रहा है। वहीं, ये मामला पुलिस तक भी पहुंच गया है।

जल संसाधन के समुचित प्रबंधन से सिंचाई रकबे में निरंतर वृद्धि : मंत्री सिलावट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने कहा है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में नवीन सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण और जल संसाधन के समुचित प्रबंधन से सिंचाई रकबे में निरंतर वृद्धि हो रही है। हर खेत तक पानी पहुंचाना प्रदेश सरकार का संकल्प है। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि यह प्रसन्नता और गौरव का विषय है कि राजगढ़ जिले की मोहनपुरा-कुंडालिया सिंचाई परियोजना को जल संसाधनों के कुशल उपयोग, जल संरक्षण और कृषि क्षेत्र में सुधार के लिए सीबीआईपी (सेंट्रल बोर्ड ऑफ इरिगेशन एंड पॉवर) अवॉर्ड्स- 2024 में 'सर्वश्रेष्ठ समन्वित जल संसाधन प्रबंधन' (बेस्ट आईडब्लूआरएम) पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इसके लिए विभागीय अमला तथा क्षेत्र के किसान बधाई के पात्र हैं।

पुरस्कार नई दिल्ली में सेंट्रल बोर्ड ऑफ इरीगेशन एंड पॉवर के ज्यूरी सदस्य श्री ए.के. दिनकर, श्री घनश्याम प्रसाद एवं डॉ. एम.के. सिन्हा द्वारा गत दिवस दिया गया है। इसे मुख्य अभियंता एवं परियोजना निदेशक श्री जीपी सिलावट, अधीक्षण यंत्री एवं परियोजना

प्रशासक श्री विकास राजोरिया, परियोजना निदेशक श्री शुभंकर बिस्वास ने प्राप्त किया।

मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि यह पुरस्कार मध्यप्रदेश की अभिनव जल प्रबंधन प्रणाली और सतत कृषि विकास में योगदान को मान्यता प्रदान करता है। यह सम्मान राज्य सरकार की दूरदर्शी जल प्रबंधन नीतियों और कुशल कार्यान्वयन का परिणाम है। पुरस्कार जल संरक्षण और आधुनिक सिंचाई प्रणालियों के विस्तार को प्रोत्साहित करेगा। उन्होंने बताया कि मोहनपुरा-कुंडालिया सिंचाई परियोजना की सबसे बड़ी खासियत 'रिजर्वायर से सीधे खेत तक' (रिजर्वायर टू फॉर्म) पानी पहुंचाने की नवीनतम तकनीक है। इस तकनीक में पारंपरिक नहरों के बजाय प्रेशराइज्ड पाइप लाइन नेटवर्क का उपयोग किया जाता है, जिससे पानी बिना किसी रिसाव और वाष्पीकरण के सीधे खेतों तक पहुँचता है। पाइप लाइन आधारित सिंचाई प्रणाली से जलाशय से निकलने वाला पानी बिना खुली नहरों के सीधे किसानों तक पाइपों के माध्यम से पहुँचाया जाता है, जिससे पानी का अपव्यय न के बराबर होता है।

मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि भू-जल स्तर संतुलन, पर्यावरणीय संतुलन, जलभराव, मिट्टी कटाव और जैव विविधता संरक्षण के साथ ही जल प्रबंधन में यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। मोहनपुरा-कुंडालिया सिंचाई परियोजना ने मध्यप्रदेश को जल प्रबंधन के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बना दिया है। इस पुरस्कार से यह सिद्ध होता है कि नवीनतम तकनीकों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ जल संसाधनों का उपयोग किया जाए, तो जल संरक्षण और सतत कृषि विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है। यह परियोजना अन्य राज्यों के लिए भी एक प्रेरणादायक मॉडल बनेगी और जल संसाधन प्रबंधन में मध्यप्रदेश की भूमिका को और सशक्त बनाएगी।

मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन, रुबीना फ्रांसिस और भरत रावत ने जीते रजत पदक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खेलो इंडिया पैरा गेम्स 2025 में मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन करते हुए दो रजत पदक अपने नाम किए। प्रदेश के खेल मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने इन उपलब्धियों पर हर्ष व्यक्त करते हुए विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी और कहा कि यह सफलता प्रदेश के पैरा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणादायक है। मध्यप्रदेश की स्टार पैरा शूटर रुबीना फ्रांसिस ने 10 मीटर एयर पिस्टल वीमेन स॥-1 स्पर्धा में शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक जीता। रुबीना अपनी सटीक निशानेबाजी के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने एक बार फिर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। एथलीट भरत रावत ने एफ-33 कैटेगरी की भाला फेंक प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन कर रजत पदक जीता। उनकी इस उपलब्धि ने प्रदेश को गर्व महसूस कराया है। खेल मंत्री श्री सारंग ने दोनों खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा कि यह मध्यप्रदेश के लिए गर्व का क्षण है। हमारे पैरा एथलीटों ने यह साबित कर दिया है कि मेहनत और लगन से किसी भी चुनौती को पार किया जा सकता है। प्रदेश सरकार खिलाड़ियों को हरसंभव सहयोग प्रदान कर रही है और आगे भी उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रतिबद्ध रहेगी। खेलो इंडिया पैरा गेम्स 2025 में मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों के इस शानदार प्रदर्शन से प्रदेश में पैरा स्पोर्ट्स को और मजबूती मिलेगी और युवा एथलीटों को प्रेरणा मिलेगी।

पर्व आध्यात्मिक संस्कृति और विज्ञान का मिश्रण है

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि बांके बिहारी से प्रार्थना करती हूं की होली का यह त्यौहार, जितने रंगों से मनाया जाता है वह सारे रंग प्रभु आप सबके जीवन में भर आपके जीवन को आनंद और खुशहाली से समृद्ध करें। होली का यह पावन पर्व हमारी भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति और विज्ञान का मिश्रण है। राज्य मंत्री श्रीमती गौर रविवार को राजधानी यादव समाज के भोपाल में आयोजित होली मिलन समारोह संबोधित कर रही थी। राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि यादववंशियों के लिए इस पर्व का बहुत महत्व है, क्योंकि हम ब्रज की होली को भगवान कृष्ण से जोड़कर मनाते हैं। ब्रज की होली भगवान श्री कृष्ण के प्रति समर्पण और भक्ति का भाव है। सबके मन में भगवान श्री कृष्ण के प्रति श्रद्धा है, उस श्रद्धा का स्वरूप इस प्रकार के आयोजनों में बड़ी संख्या में समाज की एकजुटता के साथ दिखाई देता है। समाज हमारा एकजुट हो, समाज हमारा मजबूत हो ऐसी अभिलाषा हर किसी की होती है। यादव समाज के लोगों में योग्यता और प्रतिभा कूट-कूट कर भरी हुई है। राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि शहर के बीचों-बीच बांके बिहारी और राधा रानी सरकार का यह सुंदर मंदिर और भवन बन रहा है। उन्होंने मंदिर और भवन के निर्माण में बाबू जी पूर्व मुख्यमंत्री स्व. बाबूलाल गौर के योगदान का भी स्मरण किया। उन्होंने कहा वह भी इस कार्य में पूरी निष्ठा और समर्पण से अपना योगदान देंगी।

मुख्यमंत्री ने शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को दी श्रद्धांजलि

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने देश की आज़ादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले अमर शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के बलिदान दिवस (23 मार्च) पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की है। उन्होंने कहा कि इन वीर सपूतों के बलिदान की स्मृतियाँ देश के कण-कण में विद्यमान है और आने वाली पीढ़ियों को हमेशा राष्ट्रभक्ति और साहस की प्रेरणा देता रहेगा।

ऊर्जा मंत्री तोमर ने पर्यावरण संवारने और सेहतमंद जीवन बनाने का संदेश देने चलाई साइकिल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ग्वालियर उप नगर के वाशिंदों को पर्यावरण सुरक्षा और सेहतमंद जीवन बनाने का संदेश देने के लिए ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर रविवार की सुबह कांच मील न्यू कॉलोनी स्थित अपने निवास से हजीरा इंटक मैदान सब्जी मंडी तक साइकिल से पहुँचे। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने इस दौरान सब्जी विक्रेताओं की समस्याओं को सुना और ताज़ी सब्जियां ख़रीदीं। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने समाज से स्वच्छ हवा, स्वस्थ जीवनशैली और हरियाली को अपनाने का आहवान करते हुए कहा कि प्राकृतिक संसाधनों का जिम्मेदारी से उपयोग करें ताकि प्रदूषण को कम कर पृथ्वी के संतुलन को

बनाए रखा जा सके। उन्होंने कहा कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। हम सभी को अपने जीवन में छोटी-छोटी आदतों से बड़े बदलाव लाने का प्रयास करना चाहिए।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने इंटक मैदान में क्रिकेट खेल रहे बच्चों के साथ क्रिकेट खेली तथा बच्चों को बेहतर खिलाड़ी बनकर देश का नाम रोशन करने की सलाह दी। उन्होंने क्रिकेट खेलने के लिए किट दिलाने का आश्वासन दिया।

संस्कृति के सरंक्षण और संवर्धन में शिक्षक समाज का महत्वपूर्ण योगदान है : राज्य मंत्री गौर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि शिक्षक समाज का संस्कृति के सरंक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान है । शिक्षकों के प्रयास से एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण हो, जिसमें राष्ट्रभक्ति की भावना प्रबल हो और जो राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का आधार बने। राज्य मंत्री श्रीमती गौर रविवार को महारानी लक्ष्मी बाई कन्या महाविद्यालय भोपाल में मध्यप्रदेश शिक्षण संघ द्वारा आयोजित दायित्व बोध/ शपथ समारोह को संबोधित कर रही थी। राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि मध्यप्रदेश शिक्षक संघ बीते

55 वर्षों से पूर्ण समर्पण के साथ राष्ट्र हित, शिक्षा हित, शिक्षक हित और छात्र हित में सतत कार्यरत है। राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने पदाधिकारियों को शपथ भी दिलाई। राज्य मंत्री श्री नारायण सिंह पंवार, विधायक श्री भगवानदास सबनानी, डॉ. छत्रवीर सिंह राठौर, श्री राजीव शर्मा, नागेश पांडे सहित मध्यप्रदेश शिक्षक संघ के नगर, महानगर विकासखंड, तहसील और जिलों से आए हुए सभी निर्विरोध निर्वाचित सामान्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

ओंकार पीठ का अष्टादश दीक्षांत समारोह संपन्न

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सिद्धि ज्योतिष केंद्र - ओंकार पीठ का 18वां दीक्षांत समारोह आयोग्य भारती के केंद्रीय कार्यालय, भोपाल में संपन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी रामप्रवेश महाराज मुख्य अतिथि रहे, जबकि आचार्य रमेश त्रिपाठी (संस्कृत विद्यालय, गुफा मंदिर, भोपाल), आशीष पांड्या (उज्जैन), पं. रमेश शर्मा (कथावाचक) और ज्योतिषाचार्य राजेश दुबे विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। समारोह की शुरुआत मां सरस्वती और श्री गणेश के पूजन एवं माल्यार्पण से हुई। इसके बाद सभी अतिथियों का स्वागत स्मृति चिन्ह, श्रीफल और पादप भेंट कर किया गया। स्वामी रामप्रवेश महाराज ने कहा, ज्योतिष केवल भाग्य नहीं, बल्कि सही मार्गदर्शन का विज्ञान है। सनातन परंपरा में यह जन्म-जन्मांतर के कर्मफल से जुड़ा है। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के एक कार्यक्रम का उदाहरण देते हुए बताया कि किस प्रकार शिवपुरी के पास ज्योतिषीय गणनाओं को नजरअंदाज करने से दुर्घटना होते-होते बची। उन्होंने जोर देकर कहा कि ज्योतिष का उद्देश्य केवल धन कमाना नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की सेवा करना होना चाहिए।

संस्थान के संस्थापक स्वर्गीय प्रहलाद पांड्या द्वारा 1995 में शुरू की गई इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, डॉ. राजेश मिश्रा ने अब तक हजारों छात्रों को ज्योतिष का नि:शुल्क ज्ञान दिया है। इस वर्ष 30 प्रशिक्षणार्थियों को 'ज्योतिष श्री' की उपाधि प्रदान की गई। प्रक्षिणार्थी सुषमा दुरापे ने बताया कि यहां पंचांग, ग्रह-भाव, दशा-महादशा और रत्न विज्ञान की गहन शिक्षा दी जाती है। शाम्भवी दुबे ने कहा कि पंचम भाव से करियर और शिक्षा का आकलन किया जाता है, और यहां दी जाने वाली शिक्षा पूरी तरह नि:शुल्क है।

हनुमान चालीसा और गुरु गीता का हुआ सामूहिक पाठ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के दादाजी धाम मंदिर, पटेल नगर में रविवार को आयोजित होने वाले हनुमान चालीसा और सामूहिक गीता पाठ में भक्तों ने श्रद्धा भाव से भाग लिया। इस अवसर पर दादाजी गुरुदेव के भक्त शिवरतन नामदेव, धनंजय बोरकर, अखिलेश श्रीवास्तव और पंडित राकेश स्वामी सहित अंबिका आश्रम बालीपुर के सदगुरु श्री गजानन महाराज के भक्तों ने श्री शंकर-पार्वती संवाद और श्री गुरु गीता का भावपूर्ण पाठ किया। पाठ के उपरांत आरती की गई। श्री श्री 1008 श्री दादाजी गुरुदेव चैरिटेबल ट्रस्ट ने जानकारी दी कि हर मंगलवार और शनिवार को शाम 7~30 बजे भक्तों द्वारा श्री हनुमान चालीसा का पाठ किया जाएगा। भक्तों से अनुरोध किया गया कि वे इस अवसर पर उपस्थित होकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

आगामी 30 मार्च से चैत्र नवरात्रि पर्व की शुरुआत हो रही है। इस अवसर पर मां दुर्गा का विशेष श्रृंगार प्रतिदिन किया जाएगा और सैकड़ों भक्त अखंड दीप प्रज्ज्वलित करेंगे। पहले दिन गणपति पूजन, घट स्थापना, कुलदेवी पूजन और नवग्रह पूजन किया जाएगा। इसके बाद जवारे की स्थापना और मां दुर्गा के नौ स्वरूपों का विधि-विधान से पूजन और आरती की जाएगी।

ग्रीन भारत एक्सपो का समापन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राजधानी में पिछले तीन दिनों से चल रहे ग्रीन भारत एक्सपो का रविवार को समापन हुआ। इलेक्ट्रिक व्हीकल और सोलर एनर्जी पर केंद्रित इस एक्सपो में देशभर की प्रतिष्ठित कंपनियों, निर्माताओं और संभावित निवेशकों ने भाग लिया। एक्सपो का आयोजन इमेजिन इवेंट और डिक्की द्वारा किया गया था।

खेल एवं युवक कल्याण तथा सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने एक्सपो का समापन करते हुए डिक्की और इमेजिन इवेंट को इस आयोजन के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि क्लीन एंड ग्रीन एनर्जी ही भविष्य की मांग है। हमें प्रकृति का संरक्षण करते हुए सतत विकास की ओर बढ़ना होगा। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि ग्रीन एनर्जी सिर्फ पर्यावरण संरक्षण का जरिया नहीं, बल्कि उद्यमिता और स्वरोजगार के अनंत अवसर भी प्रदान करती है।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने क्लीन और ग्रीन एनर्जी

सेक्टर में अपार संभावनाओं के द्वार खोले हैं। समापन समारोह में उन्होंने एक्सपो में भाग लेने वाली कंपनियों और प्रतिनिधियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए।

डिक्की के अध्यक्ष डॉ. अनिल सिरवैया ने बताया कि एक्सपो के जरिए युवाओं को ग्रीन एनर्जी सेक्टर में उद्यमिता के अवसरों से परिचित कराना प्रमुख उद्देश्य था। तीन दिनों में कई युवा और उद्यमी विभिन्न कंपनियों से जुड़े और व्यापार की संभावनाओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं से खासतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में सोलर स्टार्ट-अप्स को बढ़ावा मिल सकता है।

इमेजिन इवेंट के कल्याण कुशवाह ने बताया कि एक्सपो ने पर्यावरणीय समाधान और आर्थिक बचत के नए विकल्पों से लोगों को आकर्षित किया। विशेष रूप से शून्य निवेश पर सूर्यपति योजना ने जबरदस्त चर्चा बटोरी, जिससे घरों की बिजली मुफ्त करने की संभावनाएं खुलती हैं।

प्रदेश में 5 केन्द्रीय पुस्तकालयों का संचालन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में नागरिकों, विशेषकर विद्यार्थियों को अध्ययन सुविधा उपलब्ध कराने के लिये स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा 5 केन्द्रीय पुस्तकालयों का संचालन किया जा रहा है। इसके साथ ही भोपाल के जीटीबी कॉम्प्लेक्स में विभाग द्वारा वित्तीय अनुदान से स्वामी विवेकानन्द लाइब्रेरी (पूर्व ब्रिटिश लाइब्रेरी) का संचालन किया जा रहा है। इन पुस्तकालयों में विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारियों की भी सुविधा दी जा रही है। शासकीय मौलाना आजाद केन्द्रीय पुस्तकालय भोपाल को सेंट्रल लाइब्रेरी के नाम से भी जाना जाता है। यह पुस्तकालय साहित्यिक पुस्तकों का भंडार भी है। पुस्तकालय में न्यूनतम शुल्क पर अधिकतम सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। वर्तमान में पुस्तकालय में करीब एक लाख से अधिक पुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, ऊर्दू, अरबी, फारसी आदि भाषाओं में उपलब्ध हैं। इसके साथ ही विभिन्न मासिक पत्रिका, समाचार पत्र, इंटरनेट सुविधा, निशुल्क सेमिनार की सुविधा भी उपलब्ध है। पुस्तकालय के 3 अध्ययन हॉल में प्रतिदिन औसत रूप से 600 छात्र-छात्राएं बैठकर अध्ययन करते हैं। इस वर्ष मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा पुस्तकालय का अनुरक्षण एवं विकास कार्य किया गया है। पुस्तकालय में अध्ययन सुविधाओं के लिये 32 केबिन मॉडल स्टडी रूम का विकास लोक शिक्षण संचालनालय के आवंटित बजट से किया गया है। पुस्तकालय में महिला स्व-सहायता समूह को %दीदी कैंटीन के संचालन का कार्य दिया गया है। अहिल्या केन्द्रीय पुस्तकालय इंदौर 60 वर्ष पुराना हैरीटेज भवन है। पुस्तकें बुलाती हैं% अभियान के अंतर्गत इस पुस्तकालय से अब तक 17 हजार से अधिक विद्यार्थी पुस्तकालय से जुड़ कर पुस्तकालय का भ्रमण कर चुके हैं। पुस्तकालय में प्रति 15 दिवस के अंतराल में एक प्रशासनिक अधिकारी द्वारा प्रतियोगी परीक्षार्थियों को मार्गदर्शन दिये जाने की सुविधा निर्धारित की गई है। यहां लाइब्रेरी साइंस के विद्यार्थी प्रशिक्षण लेने भी आते हैं। शासकीय केन्द्रीय पुस्तकालय ग्वालियर में आने वाले छात्र-छात्राओं को व्यक्तिगत सामान रखने के लिये 190 से अधिक क्षमता वाले लॉकर रैक लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा आवंटित बजट से क्रय किया गया है। पुस्तकालय की स्वशासी समिति की बैठक के लिये निर्णय अनुसार पुरानी सदस्यताओं को संशोधित कर 13 प्रकार की नई सदस्यताएं प्रारंभ की गई हैं। पुस्तकालय की संपूर्ण गतिविधियां भी डिजिटल रूप में प्रारंभ कर दी गई है। पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के लिये नवीन सुविधाओं के साथ कॉम्पिटिशन कॉर्नर प्रारंभ किया गया है। पुस्तकालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में से 20 विद्यार्थियों का विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में चयन भी हुआ है। शासकीय केन्द्रीय पुस्तकालय जबलपुर को उसके नजदीक शासकीय उ.मा.वि. द्वारा एक अतिरिक्त कक्ष उपलब्ध कराया गया है। उक्त कक्ष में केन्द्रीय पुस्तकालय का वाचनालय पाठकों के लिये संचालित हो रहा है। जबलपुर के केन्द्रीय पुस्तकालय में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले एवं ग्रामीण अंचलों से आने वाले विद्यार्थी भी लाभान्वित हो रहे हैं।

शहीदी दिवस पर वीर सपूतों को श्रद्धांजलि

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारत माता के वीर सपूत भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के 94वें बलिदान दिवस पर आज राजधानी में श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किए गए। सुबह 10 बजे बरखेड़ा पठानी चौराहा स्थित भगत सिंह जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया, वहीं 10~30 बजे हबीबगंज अंडर ब्रिज स्थित सुखदेव, राजगुरु और भगत सिंह की प्रतिमाओं पर भी पुष्पांजलि अर्पित की गई। भेल के श्रमिक नेता दीपक गुप्ता ने कहा कि इंकलाब जिंदाबाद का नारा देने वाले इन क्रांतिकारियों ने कहा था-हम बेड़ियों में जकड़कर नहीं, बल्कि क्रांति की ज्वाला बनकर शहीद होंगे। अंग्रेज हमें मार सकते हैं, लेकिन हमारे विचारों को नहीं। इस अवसर पर वरिष्ठ नेता जे. पी. गौर, हरिराम प्रकृति, ओ. पी. शुक्ला, सतीश कनोजिया, उपेंद्र सिंह, सुशील प्रजापति, बी. डी. शुरकवारे, मनोज सोनी सहित सैकड़ों क्षेत्रवासी मौजूद रहे।

भोपाल में धूमधाम से मना आदिनाथ भगवान का जन्म कल्याण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल में जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान चौक मंदिर में मुनि श्री प्रवर सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। सुबह श्री जी की शोभायात्रा मंदिर से निकली। यह विभिन्न मार्गों से होते हुए चौक मंदिर पहुंची। शोभायात्रा में पालकी में श्री जी विराजमान थे। श्रावक शुद्ध वस्त्रों में जयकारों के साथ पालकी को ले जा रहे थे। जैन समाज के युवा दिव्य घोष के साथ आगे चल रहे थे।

पंचायत कमेटी ट्रस्ट भोपाल के अध्यक्ष मनोज बांगा और मंत्री मनोज आर एम ने बताया कि शोभायात्रा के मंदिर पहुंचने पर मूलनायक आदिनाथ भगवान के मस्तक पर स्वर्ण कलश से अभिषेक किया गया। मुनि श्री के मुखारविंद से स्वर्ण झारी से शांतिधारा की गई। इसके बाद आदिनाथ भगवान की भक्तिमय पूजन हुई।

ट्रस्ट के मंत्री ने बताया कि चौक मंदिर के अलावा झरनों मंदिर, कुराना मंदिर और एमपी नगर मंदिर में भी विशेष पूजा-अर्चना की गई।

समय-सीमा बैठक सम्पन्न

शिकायतों का समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण निराकरण सुनिश्चित करायें : कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। समय-सीमा पत्रों की समीक्षा बैठक में कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों के निराकरण की विस्तृत समीक्षा की गई। गत माह शिकायतों के निराकरण में अपेक्षित प्रगति नहीं होने पर अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए स्वास्थ्य विभाग एवं राजस्व विभाग में निम्न प्रदर्शन करने वाले एल-1 एवं एल-2 अधिकारियों को कारण बताओ सूचना पत्र जारी करने के निर्देश दिए हैं।

कलेक्टर ने निर्देशित किया है कि सभी विभाग प्रमुख शिकायतों के निराकरण की प्रतिदिन समीक्षा करें तथा शिकायतों का समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण निराकरण सुनिश्चित करायेगे। सभी विभाग प्रदेश में अपनी रैंक सुधारने पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। सभी उपखण्ड अधिकारी (राजस्व) सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों के निराकरण की खण्डस्तर पर नियमित समीक्षा करेंगे। कलेक्टर ने जनसुनवाई के दौरान समय-सीमा दर्ज प्रकरणों की नियमित समीक्षा करने तथा उनका त्वरित निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

पौधरोपण तथा गौवंश की सुरक्षा की कार्य योजना बनाने के निर्देश: कलेक्टर ने कहा कि गत वर्षों की भांति वर्षाकाल में इस वर्ष भी वृहद पैमाने पर पौधरोपण का कार्य किया जाना है। संबंधित विभाग पौधरोपण के संबंध में कार्य योजना तैयार कर लें। पौधरोपण अभियान की सफलता के लिए सभी आवश्यक तैयारियां पूर्ण कर ली जाएं। कलेक्टर ने कहा कि गौ-वंश के सड़कों पर रहने के कारण वर्षा के दिनों में कई सड़क दुर्घटनाएं होती हैं। इस वर्ष इन सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए कार्य योजना तैयार कर लें। जिले की सभी गौशालाओं को शीघ्रता से पूर्ण कर पेयजल एवं अन्य आवश्यकताओं की उपलब्धता सुनिश्चित कर गौ-शालाओं को क्रियाशील करायें। कलेक्टर ने कहा कि मुख्य मार्गों के किनारे की ग्राम पंचायतों तथा नगरीय निकायों के पशुपालकों को चिन्हांकित कर उनका संवेदीकरण करें। सड़कों में पशुओं के पाए जाने पर संबंधित पशुपालकों पर जुर्माना लगाएं।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज ने कहा कि गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी वर्षा जल संरक्षण के लिए जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जायेगा। अभियान के दौरान खेत तालाब तथा अमृत सरोवरों का निर्माण किया जाना है। उन्होने संबंधित अधिकारियों को उक्त के संबंध में आवश्यक तैयारियां सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

ई-आफिस कार्य प्रणाली के लिए आवश्यक कार्यवाही पूर्ण करने के निर्देश: राज्य शासन द्वारा कार्यालयों में कार्य प्रक्रिया में तेजी लाने एवं पारदर्शिता बढ़ाने के उद्देश्य से ई-ऑफिस की कार्यप्रणाली लागू करने एवं इसे अमल में लाने हेतु निर्देश जारी किए गए हैं। कलेक्टर द्वारा समस्त कार्यालय प्रमुखों के निर्देशित किया गया है कि वे ई-ऑफिस कार्य प्रणाली को लागू करने से संबंधित कार्यवाहियाँ जैसे शासकीय कर्मचारियों व अधिकारियों के व्यक्तिगत शासकीय ई-मेल आई.डी का निर्माण, मास्टर डेटाबेस तैयार करने के पश्चात ई-ऑफिस पोर्टल पर ऑन बोर्ड करना एवं कर्मचारियों व अधिकारियों को एनआईसी एवं जिला ई-गवर्नेंस द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करने संबंधित कार्यवाहियाँ शीघ्र कर लें। कलेक्टर ने कहा कि उक्त कार्यवाहियां प्राथमिकता से करें जिससे शासन की मंशा अनुरूप ई-ऑफिस कार्य प्रणाली को जिले के कार्यालयों में तय समय-सीमा में लागू किया जा सके।

बाल श्रम रोकने सतत निरीक्षण एवं कार्यवाही के दिए निर्देश: कलेक्टर ने सभी संबंधित विभागीय अधिकारियों को बाल एवं कुमार श्रम रोकने के लिए आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने कहा कि सभी निर्माण एजेंसी, खनिज विभाग, होटल एवं उद्योग से जुड़े विभाग इस संबंध में सदैव एलर्ट मोड में रहें। श्रम विभाग के अधिकारियों को संस्थानों की नियमित जांच करने तथा बाल श्रम को रोकने प्रभावी कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए हैं। कलेक्टर ने अधिनियम के प्रावधानों के व्यापक प्रचार-प्रसार के निर्देश दिए हैं।

बैठक में उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, सिहावल एसपी मिश्रा सहित सभी विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

70 फीट नीचे गहरी खाई में मिला गुमशुदा-व्यक्ति का शव

लकड़ी बीनने गए ग्रामीणों ने झाड़ियों में देखा था

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले में सोमवार को एक गुमशुदा व्यक्ति का कंकाल मिलने की खबर है। मृतक बीते 2 मार्च को बल्हया गांव में एक बारात में शामिल होने आया था। इसके बाद वे लापता हो गए थे।

परिजनों की शिकायत पर पुलिस ने 4 मार्च को गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज की थी। पुलिस ने पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है। घटना अमिलिया थाना क्षेत्र के चौकी सिहावल के पास कैमोर पहाड़ की खाई में हुई है।

दरअसल, लकड़ी लेने गए ग्रामीणों ने झाड़ियों में सोमवार को देखा। घटना की तत्काल सूचना पुलिस को दो। मृतक की पहचान रामभवन साहू हनुमना थानाक्षेत्र के बन्ना पाती गांव जिला मऊगंज के रूप में हुई है। कंकाल पहाड़ी से 70 फीट नीचे खाई में मिला है। पुलिस की जांच में ही मौत के असली कारणों का पता चल पाएगा।

अज्ञात हमलावरों ने दिनदहाड़े युवक पर किया वार

बेहोशी की हालत में अस्पताल लाया गया, घायल के सिर में लगे 8 टांके

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले में सोमवार दोपहर करीब 2 बजे एक युवक पर अज्ञात हमलावरों ने जानलेवा हमला कर दिया। जिससे घायल युवक मौके पर बेहोश हो गया। आसपास के लोगों की मदद से उसे जिला अस्पताल लाया गया। घायल के सिर में गंभीर चोट होने पर डॉक्टरों ने 8 टांके लगाए। घटना कोतवाली थाना क्षेत्र के बायपास पर पड़खुरी में हुई है। पुलिस आरोपियों को पकड़ने के लिए सीसीटीवी कैमरे खंगाल रही है।

दरअसल, घायल राजेश कुमार साकेत निवासी पड़खुरी बायपास अपने घर से बाहर करीब 12 किलोमीटर दूर गया था। इसी दौरान अज्ञात हमलावरों ने राजेश पर वार कर दिया। जिससे उसके सिर में गंभीर चोट आने से बेहोश हो गया। आसपास के लोगों ने तत्काल उसे जिला अस्पताल भिजवाया। जहां पर डॉक्टरों की टीम ने 8 टांके लगाए।

पीड़ित परिवार ने बताया कि उनकी किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी। स्थानीय लोगों ने मुख्य मार्गों और बायपास क्षेत्रों में पुलिस गश्त बढ़ाने की मांग की है। इधर, पीड़ित परिजनों की शिकायत पर पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। पुलिस घटनास्थल के आसपास की सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

अवैध रेत खनन में दो आरोपी गिरफ्तार

पुलिस ने टग्गी वाहन जब्त किए, खनिज एक्ट के तहत कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल में खैरहा पुलिस ने अवैध रेत खनन के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। पुलिस ने ग्राम हरदी खैरहा के मुख्य मार्ग से वाहन को जब्त किया है। पुलिस ने यह कार्रवाई सोमवार दोपहर की है।

इस मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान मोहम्मद साकिब और भैया खान के रूप में हुई है। मोहम्मद साकिब खैरहा का रहने वाला है। वहीं भैया खान ग्राम हरदी पिपरिया तिराहा का निवासी है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि पुलिस की यह कार्रवाई पर्यावरण और जल स्रोतों की सुरक्षा के लिए सकारात्मक कदम है। अधिकारियों के अनुसार अवैध रेत खनन पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा है। इसलिए इस तरह के अपराधों पर कड़ी कार्रवाई की जा रही है।

टीबी मुक्त के लिए सौ दिवसीय अभियान

74 ग्राम पंचायतें मुक्त होने की कगार पर, सैकड़ों मरीजों की हुई स्क्रीनिंग

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। विश्व टीबी दिवस पर सीधी जिले में टीबी मुक्त भारत अभियान को नई दिशा मिली है। जिले में आयोजित कार्यक्रम में टीबी विभाग के नोडल अधिकारी डॉ. हिमेश पाठक ने जानकारी साझा की।

जिले में चलाए गए 100 दिवसीय विशेष अभियान में व्यापक स्तर पर लोगों की स्क्रीनिंग की गई। पहचाने गए मरीजों को नियमित दवा और पोषण सहायता दी जा रही है।

सीधी जिले की 74 ग्राम पंचायतें टीबी मुक्त होने के करीब पहुंच गई हैं। यह सफलता स्वास्थ्य विभाग और ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों के संयुक्त प्रयास का परिणाम है। गांव-गांव में टीबी के लक्षणों और बचाव के प्रति जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है।

टीबी एक फेफड़ों को प्रभावित करने वाला बैक्टीरियल संक्रमण है। दो सप्ताह से अधिक खांसी, बलगम में खून आना और वजन में कमी इसके प्रमुख लक्षण हैं। रात में पसीना आना और बुखार भी इसकी पहचान है।

टीबी से बचाव के लिए बीसीजी वैक्सीन आवश्यक है। सरकारी अस्पतालों में टीबी का इलाज मुफ्त उपलब्ध है। डॉ. पाठक ने सभी नागरिकों से जिले को टीबी मुक्त बनाने में सहयोग की अपील की है।

शहादत दिवस पर शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि, युवाओं ने निकाली तिरंगा यात्रा

मीडिया ऑडीटर, त्योंथर (निप्र)। चाकघाट में शहीद भगत सिंह,सुखदेव,राजगुरु के शहादत दिवस पर एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्यतिथि के रूप में कारगिल विजेता महावीर चक्र से सम्मानित देश के महानायक कमांडो दिगेंद्र सिंह रहे विशिष्ट अतिथि के रूप में विधायक सिद्धार्थ तिवारी, पूर्व विधायक श्यामलाल द्विवेदी नप अध्यक्ष विभव जायसवाल रहे वही पं. चंद्रशेखर युवा उत्थान संस्थान त्योंथर के अध्यक्ष अनिकेत मिश्रा के नेतृत्व में सैकड़ों युवाओं ने पूरे नगर में तिरंगा यात्रा निकाली जिसमें इकलाब जिंदाबाद जिंदाबाद का नारा गुंजा वही सूरज पब्लिक स्कूल के संचालक शिवाकांत पांडे ने समस्त अतिथियों का स्वागत किया कार्यक्रम में कवि सम्मेलन हुआ जिसमें कवि अभिषेक द्विवेदी, डॉक्टर ओम प्रकाश मिश्रा, ओमकार कश्यप बिहार की कविता ने चार चांद लगा दी वही इलाके के विभिन्न शहीदों के परिजनों का सम्मान किया गया कार्यक्रम का सफल संचालन राहुल शुक्ला ने किया वही कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष वेदप्रकाश मिश्र, शिवाकांत पांडेय, नीलेश मिश्रा, बृजेश्वर तिवारी, नोद मिश्रा, योगेश्वर तिवारी, जितेंद्र, देवक, प्रकृति चंद्र, ज्ञान प्रकाश, मनीष, शनि जयसवाल, प्रिंस, चंद्र किरण, जीतू गुप्ता सहित अन्य उपस्थित रहे।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को दिया जा रहा ''पोषण भी पढ़ाई भी'' विषय पर प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास ने जानकारी देकर बताया है कि आयुक्त, महिला एवं बाल विकास मध्यप्रदेश के निर्देशानुसार सीधी जिले की समस्त आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण 02 चरणों में ''पोषण भी पढ़ाई भी 2.0'' विषय पर आयोजित किये जाने के निर्देश प्राप्त हुए हैं। उक्त के पालन में प्रथम चरण में 03 दिवसीय प्रशिक्षण बाल विकास परियोजना कुशमी, मझौली, रामपुर नैकिन क्र. 01, रामपुर नैकिन क्र. 02, सीधी क्र. 01, सीधी क्र. 02 एवं सिहावल में प्रथम बैच का प्रशिक्षण दिनांक 24 मार्च से 26 मार्च 2025 एवं द्वितीय बैच का प्रशिक्षण 27 मार्च से 29 मार्च 2025 में आयोजित किया जा रहा है।

प्रथम चरण में 03 दिवसीय प्रशिक्षण के प्रथम दिवस 24 मार्च को बाल विकास परियोजना कुशमी अंतर्गत परियोजना कार्यालय का मीटिंग हॉल एवं वन विभाग रेस्ट हाउस भवन पोड़ी में, बाल विकास परियोजना मझौली अंतर्गत शीलू सगुन पैलेस मझौली एवं शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मडवास, बाल विकास परियोजना रामपुर नैकिन क्र. 01 अंतर्गत जनपद पंचायत सभागार रामपुर नैकिन एवं बाल विकास परियोजना रामपुर नैकिन क्र. 02 अंतर्गत सामुदायिक भवन चुरहट तथा बाल विकास परियोजना सीधी क्र. 01 अंतर्गत जनपद पंचायत सीधी सभागार, कृषि विज्ञान केन्द्र सीधी सभागार व बाल विकास परियोजना सीधी क्र. 02 अंतर्गत आर.से.टी. युनियन बैंक प्रशिक्षण केन्द्र पुरानी सीधी, डाईट सीधी एवं बाल विकास परियोजना सिहावल अंतर्गत सामुदयिक भवन सिहावल, मंगल भवन बहरी अर्थात् जिले के कुल 13 स्थानों में कुल 1300 आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर द्वारा कोर्स डायरेक्टर के मार्गदर्शन में सफल प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण पूर्व सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का ऑनलाइन प्री एवं पोस्ट पंजीयन कराया गया। साथ ही एवं साथ आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के दौरान कोर्स डायरेक्टर द्वारा भी ऑनलाइन पंजीयन किया गया।

स्कॉर्पियो की टक्कर से पति-पत्नी की मौत

टैक्सी सवार 4 लोग घायल, अस्पताल ले जा रही एम्बुलेंस का डीजल खत्म, परिजन ने भरवाया

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर जिले के बारीगढ़ के पास रविवार रात एक तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने टैक्सी को टक्कर मार दी। घटना के बाद स्कॉर्पियो बेकाबू होकर पेड़ से टकरा गई। टैक्सी में सवार पति-पत्नी समेत 6 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायलों को अस्पताल लाया गया, लेकिन पति-पत्नी ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया।

एक महिला को गंभीर हालत में ग्वालियर रेफर किया गया है। स्कॉर्पियो में सवार लोग मौके से भाग निकले। बड़ौरा कला निवासी मृतक घनसू प्रजापति(45) के भाई बृजेश ने बताया कि उनकी भाभी सोना प्रजापति(38) के सीने में गांठ थी। घटना के समय दोनों ग्वालियर इलाज कराने जा रहे थे। वहीं, घायलों में रानीपुरा निवासी टैक्सी चालक शीलू सेन, उसका भाई सरमन सेन और दो महिलाएं शामिल हैं।

परिजन ने 500 रुपए देकर मंगवाया डीजल: हादसे के बाद घायलों को पहले बारीगढ़ अस्पताल ले जाया गया। वहां से डॉक्टरों ने सभी को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। इस दौरान रास्ते में ही एम्बुलेंस का डीजल खत्म हो गया। घायलों के परिजन ने 500 रुपए देकर डीजल मंगवाया, फिर भी एम्बुलेंस स्टार्ट नहीं हुई। करीब आधे घंटे की देरी के बाद घायलों को प्राइवेट वाहन से जिला अस्पताल पहुंचाया गया। डॉक्टरों का कहना है कि अगर घायलों को समय पर अस्पताल पहुंचाया जाता, तो दंपती की जान बचाई जा सकती थी।

स्कॉर्पियो ने किनारे खड़ी टैक्सी को मारी टक्कर: टैक्सी चालक शीलू सेन ने बताया कि बारीगढ़ से ज्योराहा जाते समय परिगढ़ नगर परिषद के सामने एक स्कॉर्पियो कार लहराती हुई आई। उसने टैक्सी को किनारे रोक दिया, लेकिन स्कॉर्पियो ने टक्कर मार दी। इसके बाद उसे कुछ याद नहीं है।

गाड़ी जब्त, आरोपी ड्राइवर की तलाश जारी: जुझार नगर थाना प्रभारी राजेंद्र सिंह जाटव ने बताया कि हादसे में दो लोगों की मौत हुई है और चार लोग घायल हुए हैं। स्कॉर्पियो गाड़ी (एमपी 16 सी 8494) त्रिलोक सिंह की है, जिसे जब्त कर लिया गया है। आरोपी की तलाश की जा रही है। घायलों का इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है।

जीडीसी की छात्राओं ने किया प्राकृतिक भ्रमण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय रीवा के महाविद्यालयीन इको क्लब द्वारा एप्को भोपाल के प्रायोजकत्व में प्राकृतिक भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्राकृतिक भ्रमण कार्यक्रम धारकुंडी आश्रम में पूरा किया गया। जिसमें लगभग 50 छात्राएं सम्मिलित हुई। धारकुंडी आश्रम से लगे हुए वन क्षेत्र की भौगोलिक एवं वानस्पतिक महत्व के बारे में विस्तार से अध्ययन किया साथ ही उसी परिक्षेत्र में स्थित अघमर्षण कुंड का दर्शन और पौराणिक महत्व की जानकारी अर्जित की गई। एवं धारकुंडी आश्रम के प्रबंधन, संचालन एवं स्वाबलम्बन का उदाहरण छात्राओं द्वारा देखा गया। लौटते समय स्थानीय बसामन मामा धाम की प्राकृतिक सुंदरता और पास स्थित गौशाला की संरचना एवं व्यवस्था का अवलोकन किया तथा प्राकृतिक शुद्धता और स्वस्थ जीवन शैली का निकट से अनुभव किया, गौशाला व्यवस्थापक द्वारा गौशाला पर अपना व्यापक व्याख्यान दिया। प्राकृतिक भ्रमण कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ मेजर विभा श्रीवास्तव के कुशल मार्गदर्शन इको क्लब प्रभारी डॉ इला तिवारी के नेतृत्व डॉ करुणा शंकर मिश्र के प्रबंधन और डॉ महेंद्र मणि द्विवेदी के संरक्षण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में सभी महाविद्यालयीन इको क्लब के सदस्य शामिल रहे । जिनमें मुख्य रूप से डॉ पुष्पा तिवारी, डॉ अनीता सोलंकी, डॉ राहुल रूपेश द्विवेदी, डॉ के के शुक्ला, डॉ अनुराधा मिश्रा, डॉ रानी पटेल, डॉ दी पी दुबे, डॉ जितेंद्रनाथ शुक्ल, डॉ संतोष तिवारी, डॉ संजल पटेल ,शिवम् त्रिपाठी,एवं 50 छात्राएं सम्मिलित रहीं।

जिला स्तरीय सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न

स्वरोजगार योजना के लक्ष्यों को अनिवार्य रूप से प्राप्त करें : कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी की अध्यक्षता में डीएलसीसी की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में कलेक्टर द्वारा स्वरोजगार योजनाओं के लक्ष्यों की विभागवार विस्तृत समीक्षा की गई। कलेक्टर श्री सोमवंशी ने कहा कि वित्तीय वर्ष समाप्ति की ओर है। सभी संबंधित विभाग एवं बैंकर्स स्वरोजगार योजना के लक्ष्यों को अनिवार्य रूप से प्राप्त करें। प्रतिदिन समीक्षा कर प्रकरणों को स्वीकृत करें तथा ऋण का वितरण किया जाना सुनिश्चित करें। कलेक्टर ने कहा कि ऐसे सभी प्रकरण जो स्वीकृत हैं उन्हे प्राथमिकता पर ऋण का वितरण किया जाना सुनिश्चित करायें। स्वरोजगार योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में हितग्राहियों को किसी भी प्रकार की कठिनाई या भटकाव नहीं होना चाहिए। साथ ही कलेक्टर ने सभी बैंकर्स को सब्सिडी की राशि क्लेम करने के लिए निर्देशित किया है। कलेक्टर ने केसीसी के प्रकरणों को प्राथमिकता के आधार पर स्वीकृत एवं वितरित करने के निर्देश दिए हैं।

कलेक्टर ने जिले के सीडी रेशियो में वृद्धि के लिए प्रयास करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने कहा कि जिले के कलेक्टर ने कहा कि सीधी जिले के परिवेश को दृष्टिगत रखते हुए प्राथमिकता सेक्टर को प्राथमिकता पर ऋण उपलब्ध कराएं।

इस अवसर पर कलेक्टर ने सम्भाव्यतायुक्त ऋण योजना 2025-26 का विमोचन किया।

युवाओं के लिए प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना लाभप्रद: डीडीएम नाबार्ड ने बताया कि प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना (पीएमआईएस) का उद्देश्य युवाओं को भारत की शीर्ष 500 कंपनियों में इंटर्नशिप के अवसर प्रदान कर रोजगारपरक बनाना है। जिससे युवाओं को वास्तविक कार्यानुभव प्राप्त हो सके और व्यावसायिक कौशल में वृद्धि हो। योजना में 21 वर्ष से 24 वर्ष आयु के युवा जिनकी शैक्षणिक योग्यता 10वीं, 12वीं, आईटीआई, पॉलीटेक्निक या स्नातक किये हैं और वे किसी अप्रेन्टिस या पूर्णकालिक रोजगार में न हो, ऐसे युवा पंजीयन कर सकते हैं। चयनित युवाओं को इंटर्नशिप की अवधि में 5000 रूपये प्रति माह स्टायपेंड और एकमुश्त 6000 रूपये की राशि प्रदान की जायेगी। इंटर्नशिप की अवधि 12 महीने होगी। इस योजना के द्वितीय राउंड में पंजीयन और प्रोफाइल पूर्ण करने एवं इंटर्नशिप अवसर में आवेदन करने की अंतिम तिथि 31 मार्च 2025 हो गयी है।

बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज, आरबीआई तथा नाबार्ड के प्रतिनिधि, लीड बैंक मैनेजर बृजेश श्रीवास्तव सहित संबंधित विभागीय अधिकारी एवं बैंकों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

बच्चों की सुरक्षा हेतु विद्यालयों एवं छात्रावासों के कर्मचारियों का किया जायेगा पुलिस सत्यापन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति की बैठक में कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा जिले के समस्त शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों एवं छात्रावासों के कर्मचारियों का पुलिस द्वारा सत्यापन कराये जाने के निर्देश दिये गये है। सोमवंशी द्वारा समस्त विद्यालयों एवं छात्रावासों में बच्चों के सुरक्षार्थ एवं बच्चों के शिकायत व सुझाव प्राप्त करने हेतु शिकायत पेटी लगाये जाने के निर्देश दिये गये हैं। बैठक में अपर कलेक्टर अंशुमान राज, उपखंड मजिस्ट्रेट सीधी नीलेश शर्मा, सिहावल एसपी मिश्रा, बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष शांत शिरोमणि पयासी, सदस्य सचीन्द्र कुमार मिश्रा, रंजना मिश्रा, सिद्धार्थ तिवारी, अजीत कुमार द्विवेदी एवं अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

विचार

न जाने दोस्त कब दुश्मन बन जाये?

प्रधानमंत्री मोदी ने शेक्सपियर को पढ़ा हो या न पढ़ा हो, लेकिन उन्होंने शेक्सपियर के शब्दों में सच्चाई को जरूर आत्मसात किया है-''दोस्ती में चापलूसी होती है'' अपने मित्र राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की चापलूसी करते हुए, नरेंद्र मोदी आप्रवासन और निर्वासन, वीजा, व्यापार संतुलन, टैरिफ, परमाणु ऊर्जा, दक्षिण चीन सागर, ब्रिक्स, क्वाड और एफ.टी.ए. के मुद्दों पर बातचीत करने की उम्मीद करते हैं। राष्ट्रपति ट्रम्प के पास 4 साल हैं, और इससे ज्यादा नहीं। प्रधानमंत्री मोदी के पास 4 साल हैं और माना जाता है कि वे इससे ज्यादा चाहते हैं। यह स्पष्ट है कि सभी मुद्दे 4 आम वर्षों में हल नहीं हो सकते। अगली अमरीकी सरकार-चाहे रिपब्लिकन हो या डैमोक्रेट-शायद ट्रम्प के रास्ते पर चलना न चाहे। यहीं भारत के लिए पहला सबक है। दो नेताओं के बीच व्यक्तिगत 'दोस्ती' से परे देखें।

इसके अलावा, जहां तक ट्रम्प का सवाल है, कोई भी भविष्यवाणी नहीं कर सकता कि दोस्त कब दुश्मन बन जाएगा और दुश्मन कब दोस्त बन जाएगा। भारत को नुकसान हो सकता है। मोदी ने पॉडकास्टर लैक्स फ्रिडमैन को दिए एक साक्षात्कार में ट्रम्प की उनकी 'विनम्रता' और 'लचीलेपन' के लिए प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि अपने दूसरे कार्यकाल में ट्रम्प 'पहले से कहीं ज्यादा तैयार थे' और 'उनके दिमाग में एक स्पष्ट रोडमैप है जिसमें अच्छी तरह से परिभाषित कदम हैं, जिनमें से प्रत्येक उन्हें उनके लक्ष्यों की ओर ले जाने के लिए डिजाइन किया गया है।' मोदी ने कहा, ''मुझे सच में विश्वास है कि उन्होंने एक मजबूत, सक्षम समूह बनाया है और इतनी मजबूत टीम के साथ, मुझे लगता है कि वे राष्ट्रपति ट्रम्प के विजन को लागू करने में पूरी तरह सक्षम हैं। सभी अमरीकी ट्रम्प की प्रशंसा से सहमत नहीं होंगे। सभी सीनेटरों और प्रतिनिधियों ने नहीं सोचा कि ट्रम्प द्वारा चुने गए सचिव सक्षम या मजबूत थे। सभी अमरीकी इस बात से सहमत नहीं होंगे कि ट्रम्प का विजन अमरीका या दुनिया के लिए अच्छा था। यदि ट्रम्प ने अपने दृष्टिकोण को लागू किया, तो यह भारत के लिए अच्छी खबर नहीं है। यदि ट्रम्प अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रहे तो इसका मतलब यह होगा कि अमरीका में अधिकांश अनिर्दिष्ट भारतीयों (अनुमानित 700,000) को भारत भेज दिया जाएगा। इसका मतलब यह होगा कि कई भारतीय ग्रीन कार्ड धारकों को अमरीकी नागरिकता से वंचित कर दिया जाएगा। इसका मतलब यह होगा कि अधिकांश भारतीय-अमरीकी नागरिक अपने परिवारों को संयुक्त राज्य अमरीका नहीं ला पाएंगे। इसका मतलब यह होगा कि उच्च योग्यता वाले भारतीयों को जारी किए जाने वाले एच-1बी वीजा की संख्या में भारी कमी आएगी। इसका मतलब यह होगा कि भारत को हार्ले-डेविडसन बाइक, बॉर्बन व्हिस्की, जींस और अन्य अमरीकी सामानों पर टैरिफ कम करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

एक वृहद धर्मनिरपेक्ष गठबंधन बनाए जाने की जरूरत

वी-डेम इंस्टिट्यूट की भारत के संबंध में रपट, जो द हिंदू में प्रकाशित की गई है, में कहा गया है कि यह रेखांकित करते हुए कि लोकतंत्र के लगभग सभी घटकों की स्थिति जितने देशों में सुधर रही है, उससे अधिक देशों में बिगड़ रही है, रपट में विशेष तौर पर यह जिक्र किया गया है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, निष्पक्ष चुनाव और संगठित होने व नागरिक समाज की आजादी पर निरंकुशता की ओर बढ़ते देशों में सबसे गंभीर दुष्प्रभाव पड़ा है। रपट में भारत के मैदानी हालात का काफी सटीक सार प्रस्तुत किया गया है। इसके अलावा, भारत में अल्पसंयकों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जा रहा है। हाल के समय में आरएसएस-बीजेपी मिलकर हिंदू उत्सवों और समागमों का इस्तेमाल अल्पसंयकों को आतंकित करने के एक और औजार के रूप में करने लगे हैं। यह रामनवमी के समारोहों, होली और कुंभ मेले के दौरान व्यापक तौर पर देखा गया।

पिछले दस सालों से सत्ता पर काबिज समूह के बढ़ते हुए तानाशाहीपूर्ण रवैये के चलते ही तमाम विरोधाभासों के बावजूद अधिकांश विपक्षी दलों के एकजुट होकर इंडिया गठबंधन बनाया। इस गठबंधन के गठन, राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा व भारत जोड़ो न्याय यात्रा व सामाजिक समूहों द्वारा गठित मंचों जैसे इंदिलू कर्नाटका और भारत जोड़ो अभियान का मिलाजुला प्रभाव लोकसभा चुनावों पर पड़ा और भाजपा का 400 सीटें जीतने का लक्ष्य मिट्टी में मिल गया। यह सच है कि इंडिया गठबंधन वांछित दिशा में नहीं बढ़ा और विधानसभा चुनाव मिलकर लड़ने का इरादा पूरा न हो सका। यह इंडिया गठबंधन को महाराष्ट्र और हरियाणा चुनावों में सफलता हासिल न हो पाने की एक वजह थी। इसकी दूसरी वजह थी संघ परिवार के सभी सदस्यों द्वारा भाजपा के पक्ष में पूरी ताकत लगा देना। यह कोई नई बात नहीं है लेकिन यह उल्लेखनीय है कि लोकसभा चुनावों के दौरान जे। पी। नड्डा ने बयान दिया था कि भाजपा को आरएसएस की मदद की जरूरत नहीं है क्योंकि अब वह इतनी सशक्त हो गई है कि सिर्फ अपने दम पर चुनाव जीत सके। ऐसा लगता है कि लोकसभा चुनावों के बाद इंडिया गठबंधन को मजबूत बनाने की महत्वपूर्ण जरूरत के प्रति उसके कई घटक दलों का रवैया उपेक्षापूर्ण रहा और कई ने इसके प्रति उदासीनता दर्शाई और सबसे बड़े विपक्षी दल, कांग्रेस ने भी इस संबंध में कोई बड़ी पहल नहीं की। यहां यह उल्लेखनीय है कि विचारधारा की दृष्टि से इस गठबंधन का सशक्त घटक सीपीआई (एम) इस मामले पर पुनर्विचार कर रहा है। उसके कार्यवाहक महासचिव प्रकाश करात ने कहा है कि विपक्षी इंडिया गठबंधन लोकसभा चुनाव के लिए बनाया गया था राज्यों के चुनावों के लिए नहीं।।।और उन्होंने धर्मनिरपेक्ष विपक्षी दलों का एक वृहद गठबंधन बनाए जाने का आव्हान किया।

उन्होंने यह भी कहा कि गठबंधनों को एक वृहद परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए ताकि चुनावी राजनीति उनका गला न घोंट दे। यही बात दूसरे शब्दों में वामपंथी झुकाव वाले बुद्धिजीवी कह रहे हैं जिनका मानना है कि भाजपा दरअसल, एक पूरी तरह फासीवादी पार्टी नहीं है। जैसे प्रभात पटनायक तर्क देते हैं कि जहां नवउदारवादी पूंजीवाद एक 'फासीवादी हालात' उत्पन्न करता है जो दक्षिणपंथी अधिनायकवादी आंदोलनों, विदेशियों के प्रति द्वेष, अति राष्ट्रवाद और लोकतांत्रिक मूल्यों के क्षय के रूप में प्रकट होती है - किंतु यह अनिवार्यत: 1930 के दशक के पूरी तरह से 'फासीवादी राष्ट्र' का पुनर्सृजन नहीं करती।''

हिन्दुत्वादी राष्ट्रवाद के लिए नव फासीवाद, आद्य फासीवाद, कट्टरवाद आदि कई शब्दों का इस्तेमाल किया गया है परंतु रेखांकित करने वाली बात यह है कि कोई भी राजनैतिक परिघटना स्वयं को उसी तरीके से नहीं दुहराती। आज हिन्दुत्वादी राष्ट्रवाद के कई लक्षण फासीवाद से मिलते-जुलते हैं। फासीवाद ही आरएसएस के संस्थापकों, विशेषकर एम। एस। गोलवलकर का प्रेरणास्त्रोत था। उन्होंने अपनी पुस्तक ''वी ऑर अवर नेशनहुड डिफाइंड'' में कहा अपनी संस्कृति और नस्ल की शुद्धता कायम रखने के लिए जर्मनी ने सेमेटिक नस्लों - यहूदियों - का देश से सफाया कर दुनिया को आश्चर्यचकित कर दिया। यह नस्लीय अभिमान की उच्चतम अभिव्यक्ति है। जर्मनी ने यह भी दिखा दिया है कि मूलभूत अंतर वाली विभिन्न संस्कृतियों और नस्लों का मिलकर एक हो जाना लगभग असंभव होता है। यह हिन्दुस्तान में हमारे लिए एक अच्छा सबक है जिससे हम कुछ सीख सकते हैं और लाभान्वित हो सकते हैं।

हम भारत में फासीवाद के लक्षणों को उभरता देख रहे हैं जैसे स्वर्णिम अतीत, अखंड भारत की अभिलाषा, अल्पसंख्यकों को देश का शत्रु करार देकर निशाना बनाना, अधिनायकवाद, बड़े उद्योग-धंधों को बढ़ावा देना, अभिव्यक्ति की आजादी पर प्रहार और सामाजिक चिंतन पर हावी होना आदि। हम यहां अभिव्यक्ति की आजादी के प्रति असहनशीलता का नजारा देख रहे हैं, जैसा कि महात्मा गांधी के प्रपौत्र तुषार गांधी के मामले में हाल में हुआ। उन्होंने कहा था ''आरएसएस एक जहर है। वे इस देश की अंतरात्मा को नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं। हमें इससे भयभीत होना चाहिए क्योंकि यदि अंतरात्मा नष्ट हो जाती है, तो सब कुछ छिन जाता है। तुषार गांधी से माफी मांगने और अपने शब्द वापस लेने की मांग की गई। उन्होंने दोनों में से कुछ भी नहीं किया और अब उन्हें हत्या की धमकियां दी जा रही हैं।

आरएसएस ने अपनी जबरदस्त पहुंच, सैकड़ों अनुषांगिक संगठनों, हजारों प्रचारकों और लाखों कार्यकर्ताओं के माध्यम से आजादी के आंदोलन से जन्मे भारत के विचार के लिए खतरा पैदा कर दिया है, आजादी के आंदोलन के मूल्य हमारे संविधान में अभिव्यक्त हुए, जो सभी नागरिकों को समान अधिकार देने पर आधारित हैं और इसके केन्द्र में है समावेशिता। आरएसएस की विचारधारा आजादी के आंदोलन और भारतीय संविधान के मूल्यों के विपरीत है। और वह अपने विशाल नेटवर्क के माध्यम से उसे आगे बढ़ा रहा है।

प्रारंभ में उसने इतिहास को तोड़-मरोड़कर मुसलमानों के प्रति नफरत पैदा की, जैसा इस समय महाराष्ट्र में हो रहा है जहां औरंगजेब की कब्र को हटाया जाना सत्ताधारी भाजपा की पहली प्राथमिकता बन गया है। इस समय उसके इशारे पर स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता महात्मा गांधी भी हैं, जिनके बारे में यह प्रोपेगेंडा फैलाया जा रहा है कि हमें आजादी दिलवाने में उनकी कोई भूमिका नहीं थी। यहां तक कि उसके कई सोशल मीडिया पोस्टों पर यह तक दावा किया जा रहा है कि गांधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन में रोड़े अटकाने का काम किया।

यह सूची बहुत लंबी है। आज क्या किए जाने की जरूरत है? करात का यह कहना सही है कि एक वृहद धर्मनिरपेक्ष गठबंधन बनाए जाने की जरूरत है। इंडिया गठबंधन निश्चित रूप से इस यात्रा का पहला कदम था। जरूरत इस बात की है कि इस गठबंधन को और सशक्त बनाया जाए। गठबंधन के आंतरिक मतभेदों, टकरावों और विवादों को सुलझाया जाए। गठबंधन के सदस्य दलों के बीच कुछ विरोधाभासों के बावजूद 10 लाख से अधिक सदस्यों वाली करात की पार्टी इस गठबंधन को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। एक बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए घटक दलों को छोटी-छोटी कुर्बानियां देनी ही होंगीं।

इस प्रक्रिया को और बल प्रदान करने के लिए सामाजिक संगठनों को वह प्रभावी काम जारी रखना होगा जो उन्होंने 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद किया था। एक राष्ट्रीय धर्मनिरपेक्ष गठबंधन भी इन्हें शुरू कर सकता है। वर्तमान सत्ताधारियों का ठीक-ठीक चरित्र फासीवादी हो या उसमें फासीवाद के कुछ तत्व हों या जो भी हो, इंडिया की रणनीति एक व्यापक गठबंधन बनाने की होनी चाहिए जो उस ऊर्जा और गतिशीलता से भरा हुआ हो, जो 2024 के लोकसभा चुनाव के ठीक पहले नजर आई थी।

टीबी के खिलाफ जंग को करना होगा तेज

भारत काफी लंबे समय से टीबी नामक बिमारी से जंग लड़ रहा है। लेकिन अब टीबी को लेकर एक डरावनी स्टडी सामने आई है। जर्नल प्लस मेडिसीन की स्टडी के मुताबिक भारत में अनुमान है कि 2021 से 2040 तक टीबी के 6 करोड़ केस और 80 लाख मौतें हो सकती है। स्टडी के मुताबिक भारत को इस बिमारी के चलते न सिर्फ जान का नुकसान होगा बल्कि सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) को 146 अरब डॉलर से अधिक का नुकसान होने की संभावना है। लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन यूके के रिसर्चर ने कहा कि इसके चलते कम आय वाले मिडिल क्लास परिवार ज्यादा संकट में हैं। उनको स्वास्थ्य संबंधी बोझ झेलना पड़ सकता है। जबकि अमीर परिवारों को आर्थिक बोझ झेलना पड़ सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने वैश्विक क्षय रोग (टीबी) रिपोर्ट 2024 जारी किया है। जिसमें 2024 में दुनिया की 99 प्रतिशत से अधिक आबादी और टीबी के मामलों वाले 193 देशों के डाटा की रिपोर्ट को शामिल किया गया है। यह रिपोर्ट वैश्विक, क्षेत्रीय और देश स्तर पर टीबी महामारी एवं रोग की रोकथाम, निदान और उपचार में प्रगति का व्यापक व अद्यतन मूल्यांकन प्रदान करती है। रिपोर्ट के मुख्य निष्कर्ष के अनुसार 2023 में भारत में लगभग 25.2 लाख टीबी के मामले सामने आये थे। जो 2022 में 24.2 लाख मामलों से अधिक थे। भारत और इंडोनेशिया में वर्ष 2021 से 2023 तक टीबी के वैश्विक मामलों में कुल वृद्धि 45 प्रतिशत थी। दुनिया के पांच देश भारत, इंडोनेशिया चीन, फिलीपींस, पाकिस्तान में टीबी के कुल वैश्विक मरीजो के 56 प्रतिशत थे।

भारत में वर्ष 2015 से 2023 के मध्य टीबी के मामलों में 18 प्रतिशत की गिरावट देखी गई है। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वर्ष 2025 तक 50 प्रतिशत कमी के लक्ष्य से बहुत कम है। इसी प्रकार टीबी से संबंधित मौतों में 75 प्रतिशत के लक्ष्य के मुकाबले केवल 24 प्रतिशत की कमी आई है। वैश्विक स्तर पर 2023 में 82 लाख लोगों में टीबी के नए मामलें देखे गए।

यह वर्ष 1995 में डब्ल्यूएचओ द्वारा निगरानी शुरू करने के बाद से सबसे अधिक संख्या है। 2023 में टीबी कोविड-19 को पीछे छोड़ते हुए पुन: प्रमुख संक्रामक रोग बन गया है।

टीबी एक संक्रामक बीमारी है। जो संक्रमित लोगों के खांसने, छींकने या थूकने से फैलती है। यह आमतौर पर फेफड़ों को प्रभावित करती है। लेकिन यह शरीर के किसी भी हिस्से में फैल सकती है। इस बीमारी का इलाज तो है बशर्ते लोग नियमित रूप से दवा लें। हर वर्ष 24 मार्च को पूरे विश्व में टीबी (विश्व क्षय रोग) दिवस मनाया जाता है। इस दिन टीबी यानि तपेदिक रोग के बारे में लोगों को जागरूक किया जाता है। भारत में बहुत बड़ी आबादी गरीबी रेखा के नीचे जीवन गुजार रही है। देश में जब तक गरीबी दूर नहीं होगी तब तक टीबी पर पूर्णतया रोक नहीं लग पायेगी।

एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में स्वास्थ्य सेवा का बड़ा ढांचा कमजोर है और स्वास्थ्य कर्मचारियों की भारी कमी है। इसके अलावा बीमारी का शुरुआती दौर में पता लगने में दिक्कत और सही इलाज का मिलना चुनौती बनी हुई है। विश्व में भारत पर टीबी का बोझ सबसे अधिक है। यही वजह है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में टीबी उन्मूलन को प्राथमिकता के तौर पर लिया गया है। इसका उद्देश्य टीबी के नए मामलों में 95 प्रतिशत की कमी करना और टीबी से मृत्यु में 95 प्रतिशत की कमी लाना है। देश में जिन टीबी रोगियों का

इलाज चल रहा है उन्हें सरकार द्धारा 500 रुपए प्रतिमाह नगद सहायता के रूप में दिए जा रहें हैं। टी.बी माइक्रोबैक्टीरियम नामक बैक्टीरिया की वजह से होता है। यह बैक्टीरिया फेफड़ों में उत्पन्न होकर उसमें घाव कर देते हैं। यह कीटाणु फेफड़ों, त्वचा, जोड़ों, मेरूदण्ड, कण्ठ, हड्डियों, अंतडियों आदि पर हमला कर सकते हैं। दुनिया में छह-सात करोड़ लोग इस बीमारी से ग्रस्त हैं और हर वर्ष 25 से 30 लाख लोगों की इससे मौत हो जाती है। दुनिया में बीमरियों से मौत के 10 शीर्ष कारणों में टीबी को प्रमुख बताया गया है।

एक अनुमान के मुताबिक भारत में रोजाना करीब आठ सौ लोगों की मौत टीबी की वजह से हो जाती है। भारत में टीबी के करीब 10 प्रतिशत मामले बच्चों में हैं। लेकिन इसमें से केवल छह प्रतिशत मामले ही सामने आते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि भारत में टीबी के केवल 58 प्रतिशत मामले ही दर्ज होते हैं। एक तिहाई से ज्यादा मामले या तो दर्ज ही नहीं होते हैं या उनका इलाज नहीं हो पाता है। इसका बड़ा कारण यह है कि गैर सरकारी सेक्टर के अस्पतालों में टीबी को दर्ज किए जाने का अब तक कोई सिस्टम नहीं बना पाना है। संगठन का ऐसा अनुमान है कि ऐसे तकरीबन दस लाख और टीबी मरीज देश में है जिन्हें पहचाना ही नहीं जा सका है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा है कि भारत टीबी से निपटने को लेकर गंभीर नहीं है। अपनी ग्लोबल टीबी रिपोर्ट में उसने हमारे आंकड़ों पर भी सवाल उठाया है। उसके मुताबिक भारत ने टीबी के जितने मामले बताए हैं। वास्तव में मरीज उससे कहीं ज्यादा हैं। भारत के गलत आंकड़ों की वजह से इस रोग का विश्वस्तरीय आकलन सही ढंग से नहीं हो पाया है। पिछले कुछ समय से टीबी के कई नए रूप सामने आ गए हैं। कई मानसिक बीमारियां टीबी का बड़ा कारण बनकर उभरी हैं। इस बीमारी को लेकर हमे नजरिया बदलने की जरूरत है। सरकार को परम्परागत तौर-तरीके से बाहर निकलना होगा। टीबी से निपटने के लिए सरकार को निजी क्षेत्र के साथ मिलकर व्यापक योजना बनानी होगी।

टीबी का संबंध पोषण से जुड़ा रहता है। भूखे पेट रोगों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए टीबी की बीमारी के शिकार गरीब तबके के लोग ज्यादा होते हैं। पोषण से मतलब संतुलित भोजन से माना जाना चाहिए। इसलिए यहां पर केवल टीबी का इलाज मुहैया करा भर देने से टीबी का खात्मा संभव नहीं है। यह तब मुमकिन होगा जबकि देश में लोगों को रोग प्रतिरोधक ताकत बनाए रखने के लिए संतुलित आहार भी मिले।

कुछ वर्षों पूर्व तक टीबी की बीमारी को लाईलाज रोग माना जाता था।

टीबी के मरीजो को घर से अलग रखा जाता था व उससे अछूत जैसा व्यवहार किया जाता था। मगर अब टीबी की बीमारी का देश में पर्याप्त उपचार व दवा उपलब्ध है। टीबी के रोगियों द्वारा नियमित दवा के सेवन से नो माह में ही टीबी का रोगी पूर्णत: स्वस्थ हो जाता है। सरकार को टीबी रोग की प्रभावी रोकथाम के लिये बजट में स्वास्थ्य सुविधओं के विस्तार के लिये और अधिक राशि का प्रावधान करना होगा। टीबी के प्रति लोगों को सचेत करने के लिये देश भर में टीबी जागरूकता कार्यक्रम चलाने होंगे। देश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य केन्द्रो की संख्या बढ़ाकर ही टीबी पर काबू पाया जा सकता है।

25 लाख की लूट, पिस्टल-कट्टा के साथ 3 आरोपी अरेस्ट

4 बड़ी वारदात को दिया अंजाम, कैश और सोने-चांदी के जेवर बरामद

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा (एजेंसी)। सरगुजा के सीतापुर में दुकान संचालक के घर करीब 25 लाख के लूट के तीन आरोपियों को पुलिस ने पकड़ा है। आरोपियों के पास ले लूटे गए सोने-चांदी के जेवर, कैश के साथ पिस्टल और कट्टा भी बरामद किया गया है। हथियारबंद नकाबपोश गिरोह के सदस्यों ने 5 दिन पहले राइस मिल संचालक के घर भी लूट की कोशिश की थी। इससे पहले आरोपियों ने लूट की 4 और वारदात को अंजाम दिया था। जिसके बाद पुलिस ने लूट के कई मामले की जांच के लिए एक विशेष टीम गठित की। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों की तलाश की। पुलिस सबसे पहले शिवा उर्फ डेविड एक्का तक पहुंची, जिसकी निशानदेही पर दो अन्य आरोपियों को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

हालांकि, घटना में शामिल एक अन्य आरोपी अब भी फरार है, जिसकी तलाश जारी है। पकड़े गए तीनों आरोपी निगरानीशुदा अपराधी हैं और इन पर पहले से ही कई आपराधिक मामले दर्ज हैं।

इन अपराधों में शामिल थे आरोपी: 23 नवंबर 2024 - लुचकी घाट लूटकांड- सीतापुर से अंबिकापुर जा रही एक स्कूटी सवार छात्रा को शिकार बनाया। बाइक सवार युवकों ने लुचकी घाट के पास उसे रोका। इसके बाद मोबाइल और स्कूटी लूट ली। इस मामले में कोतवाली पुलिस ने धारा 309(6) बीएनएस के तहत अपराध दर्ज किया था।

08 फरवरी 2025 - टीचर के घर डकैती- अज्ञात नकाबपोश युवकों ने कुनमेरा की शिक्षिका के घर घुसकर जान से मारने की धमकी दी। 3500 रुपए, सोने के दो जोड़ी टॉप्स, दो जोड़ी पायल, मंगलसूत्र और मोबाइल लूट लिया। आरोपियों ने टीचर के फोन से 94 हजार रुपए भी विड्रॉल कर लिए थे। इस मामले में सीतापुर पुलिस ने धारा 331(2), 309(4) बीएनएस के तहत अपराध दर्ज किया था।

26 फरवरी 2025 - रिटायर्ड डिप्टी रेंजर के घर 25 लाख की डकैती- सीतापुर थाना क्षेत्र के ग्राम नवापारा में हथियारबंद युवकों ने रिटायर्ड डिप्टी रेंजर राधेश्याम गुप्ता के घर धावा बोलकर परिवार को बंधक बना लिया। कट्टा और पिस्टल की नोक पर उन्होंने 2 लाख रुपए नगद और सोने-चांदी के जेवर लूट लिए। कुल कीमत करीब 25 लाख रुपए आंकी गई थी। आरोपियों की यह वारदात गुप्ता के किराना दुकान के सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई।

17 मार्च 2025 - राइस मिल संचालक के घर लूट की कोशिश- राधापुर निवासी राजेंद्र कुमार अग्रवाल के घर में रात 9:30 बजे हथियारबंद बदमाश घुसे और चौकीदार को बंधक बनाकर घर खुलवाने की कोशिश की। जब दरवाजा नहीं खोला गया, तो चौकीदार का मोबाइल लूटकर फरार हो गए। इससे एक दिन पहले, 16 मार्च की रात, युवकों ने राजेंद्र अग्रवाल के घर घुसने की कोशिश की थी और इस दौरान वे सीसीटीवी कैमरों में कैद हो गए थे। इस मामले में सीतापुर थाने में धारा 309 बीएनएस के तहत अपराध दर्ज किया गया था।

जेल में बनाई लूट की योजना: आरोपी शिवा उर्फ डेविड एक्का पहले भी लूट और चोरी के कई मामलों में शामिल रहा है। उसके खिलाफ सीतापुर, पत्थलगांव और बगीचा थाना क्षेत्र में कई केस दर्ज हैं। वहीं, दूसरा आरोपी लखन उरांव जशपुर के दोहरे हत्याकांड में शामिल रहा है। उसे पैसे लेकर कॉन्ट्रैक्ट किलिंग करने के आरोप में जेल भेजा गया था।

शिवा और लखन की रूपेंद्र श्रीवास और चौथे आरोपी की मुलाकात जशपुर जेल में हुई थी। जेल में इन चारों आरोपियों ने अपना गिरोह बनाया। फिर जेल से छूटने के बाद चारों आरोपियों ने मिलकर लूट की योजना बनाई और एक के बाद एक वारदातों को अंजाम दिया।

आरोपियों से लाखों के जेवर और हथियार बरामद: पुलिस ने आरोपियों के पास से करीब 15 लाख रुपए के जेवर और नकदी बरामद किए हैं। इसमें 71.66 ग्राम गला हुआ सोना, 195 ग्राम चांदी, 2,500 रुपए कैश, एक मंगलसूत्र और दो पायल शामिल हैं।

इसके अलावा, पुलिस ने लूट में इस्तेमाल किए गए हथियार और वाहन भी जब्त किए हैं। आरोपियों के पास से 1 पिस्टल, 1 कट्टा, जिंदा कारतूस, लूट की स्कूटी, बाइक, वारदात में प्रयुक्त कार और लूटा गया मोबाइल बरामद किया गया है।

लूट का जेवर खरीदने वाले सराफा व्यापारी भी गिरफ्तार: आरोपियों ने लूटा गया सोना झारखंड और जशपुर के ज्वेलरी दुकानों में बेच दिया था। पुलिस ने लूट के जेवर खरीदने वाले झारखंड (रांची) के सुशील प्रसाद ताम्रकर (46) और कुनकुरी जशपुर के राजेंद्र सोनी (46) को भी गिरफ्तार किया है। इन दोनों के खिलाफ धारा 317(2) बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया गया है।

ये हुए गिरफ्तार: शिवा उर्फ़ डेविड एक्का (22 साल) निवासी कुनमेरा, सीतापुर

लखन उरांव (28) निवासी लोहरदगा, झारखंड

रूपेंद्र श्रीवास (27) निवासी पत्थलगांव, जिला जशपुर

सीजी हाईकोर्ट ने निलंबन अवधि को ड्यूटी माना

वनपाल की याचिका पर सुनवाई, शासन का शत-प्रतिशत वसूली का आदेश रद्द

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने कर्मचारी के निलंबन अवधि को ड्यूटी का हिस्सा माना है। साथ ही राज्य शासन के शत-प्रतिशत वसूली के आदेश को खारिज कर दिया है। रायगढ़ वन मंडल में वनपाल पद पर कार्यरत दिनेश सिंह राजपूत ने इस मामले में रिट याचिका दायर की थी। जस्टिस बीडी गुरु की सिंगल बेंच ने याचिका पर सुनवाई की। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हवाला देते हुए निलंबन अवधि को ड्यूटी का हिस्सा माना। जस्टिस गुरु ने अपने फैसले में कहा कि अनुशासनात्मक प्राधिकारी, समीक्षा प्राधिकारी और अपीलीय प्राधिकारी ने निलंबन अवधि को कर्तव्य न मानने की सजा में हस्तक्षेप नहीं किया। यह भेदभावपूर्ण है। क्योंकि इसी तरह के अन्य मामलों में निलंबन अवधि को कर्तव्य माना गया था।

मुख्य वन संरक्षक के आदेश को चुनौती दी: वनपाल दिनेश सिंह ने अधिवक्ता संदीप दुबे और आलोक चंद्रा के माध्यम से याचिका दायर की थी। उन्होंने प्रधान मुख्य वन संरक्षक के 5 सितंबर 2022 के आदेश को चुनौती दी थी। इस आदेश में बड़े दंड को छोटे दंड में बदला गया था। लेकिन निलंबन अवधि को कर्तव्य नहीं माना गया था। याचिकाकर्ता ने छत्तीसगढ़ राज्य प्रमुख सचिव के उस आदेश पर भी सवाल उठाया था। जिसमें उनके आवेदन को खारिज कर अपीलीय अधिकारी के आदेश को बरकरार रखा गया था।

क्या है मामला: याचिकाकर्ता दिनेश सिंह 2 जनवरी 2015 से 2 जुलाई 2019 तक एतमानगर रेंज के कोंकणा बीट के अतिरिक्त प्रभार के साथ बीट गार्ड बरौदखार के पद पर तैनात था। याचिकाकर्ता को तथ्य और जानकारी छिपाने और गुमराह करने के आरोप में 2 जुलाई 2019 से निलंबित कर दिया गया था। बता दें कि पेड़ों की अवैध कटाई के संबंध में रिपोर्ट के अध्ययन के बाद 8 मई 2020 को मुख्य वन संरक्षक बिलासपुर वन वृत्त ने निलंबन आदेश को निरस्त कर दिया। विभागीय जांच लंबित रहने के दौरान याचिकाकर्ता को कटघोरा रेंज कार्यालय में विशेष ड्यूटी वन रक्षक के पद पर पदस्थ कर दिया।

10 माह 7 दिनों के लिए निलंबित: आदेश में यह भी उल्लेख किया गया कि निलंबन अवधि विभागीय जांच के साथ तय की जाएगी। याचिकाकर्ता ने बताया है कि उसे 312 दिनों यानी 10 माह 7 दिनों के लिए निलंबित रखा गया। उन्होंने भेदभावपूर्ण कार्रवाई का आरोप लगाया था।

नवनिर्वाचित सरपंचों के लिए ओडीएफ प्लस मॉडल गांव निर्माण पर कार्यशाला का आयोजन

एमसीबी। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशन एवं जिला पंचायत सीईओ अंकिता सोम के मार्गदर्शन में जनपद पंचायत खड़गवां में नव निर्वाचित सरपंचों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के तहत ग्राम पंचायतों को ओडीएफ प्लस मॉडल गांव के रूप में विकसित करना था। कार्यशाला में जिला समन्वयक राजेश जैन ने ओडीएफ प्लस मॉडल गांव की अवधारणा पर विस्तार से चर्चा की और इसमें शामिल घटकों को समझाया। उन्होंने बताया कि ग्राम पंचायतों में नियमित डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण एवं पृथक्करण, सामुदायिक और घरेलू गंदे पानी के उचित निपटान को सुनिश्चित करना अनिवार्य होगा। ग्राम पंचायतों की प्रमुख जिम्मेदारियों पर प्रकाश डालते हुए यह बताया गया कि उन्हें अपने क्षेत्र को सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त बनाने हेतु प्रस्ताव पारित कर उसका कड़ाई से पालन कराना होगा, साथ ही उल्लंघन की स्थिति में जुर्माने का प्रावधान भी लागू करना होगा।

8 लाख की अवैध शराब जब्त, 4 गिरफ्तार

आरोपियों ने बाथरूम और पानी टंकी में छुपा रखा था शराब बनाने का कच्चा माल

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में आबकारी विभाग ने रविवार को छह अलग-अलग स्थानों पर छापेमारी कर करीब 8 लाख रुपए मूल्य का महुआ लहान और अवैध शराब बरामद किया। शराब बनाने के लिए यह महुआ लहान बाथरूम और पानी की टंकी में छुपाकर रखा गया था। इस छापेमारी में कुल 62 प्रकरण दर्ज किए गए और 4 लोगों को गिरफ्तार किया गया। उनके कब्जे से 131 लीटर महुआ शराब और 6960 किलोग्राम महुआ लहान जब्त किया गया। इसके अलावा ग्राम अमने से 50 लीटर महुआ शराब व 960 किलोग्राम महुआ लहान और धूमा के जंगल से 70 लीटर महुआ शराब जब्त की गई। अज्ञात आरोपियों के खिलाफ भी मामला दर्ज किया गया है।

एक साथ छह जगहों पर छापेमारी: आबकारी विभाग की टीम ने तखतपुर और कोटा में अवैध शराब के खिलाफ अभियान चलाते हुए ग्राम धूमा चौकी जुनापारा में छापा मारा। यहां बाथरूम और पानी टंकी में छिपाकर रखे गए 9 ड्रम महुआ लहान जब्त किए गए। इसके अलावा आंगन में भी एक ड्रम लहान बरामद हुआ। दरअसल, आबकारी आयुक्त आर संगीता ने हाल ही में संभाग के अधिकारियों की बैठक ली थी। उन्होंने अवैध शराब के खिलाफ सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए थे। कलेक्टर अवनीश कुमार शरण के निर्देश और सहायक आयुक्त नवनीत तिवारी के मार्गदर्शन में यह कार्रवाई की गई।

आरोपियों के पास से जब्त की शराब: पकड़े गए आरोपियों में धूमा, जूनापारा चौकी निवासी रामचंद्र ध्रुव से 9 लीटर, आजू राम टेकाम से 6000 किलोग्राम महुआ लहान, अजय भारद्वाज से 4 लीटर और अमने थाना कोटा निवासी प्रेमदास से 8 लीटर महुआ शराब बरामद की गई। इसके अलावा ग्राम अमने से 50 लीटर महुआ शराब और 960 किलोग्राम महुआ लहान तथा धूमा के जंगल से 70 लीटर महुआ शराब भी जब्त की गई है।

आरोपियों को भेजा गया जेल: प्रभारी सहायक आयुक्त नवनीत तिवारी ने बताया कि छापेमारी में 7.66 लाख रुपए मूल्य का महुआ लहान और 37 हजार रुपए की अवैध शराब जब्त की गई। सभी आरोपियों के खिलाफ छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम की धारा 34(2)(क) के तहत मामला दर्ज कर उन्हें जेल भेज दिया गया।

आरोपियों को भेजा गया जेल: आबकारी विभाग के प्रभारी सहायक आयुक्त नवनीत तिवारी ने 'दैनिक भास्कर' को बताया कि छापेमारी में 7.66 लाख रुपए मूल्य का महुआ लहान और 37 हजार रुपए मूल्य की अवैध महुआ शराब जब्त की गई। उन्होंने बताया कि सभी आरोपियों के विरुद्ध छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम की धारा 34(2)(क) के तहत प्रकरण दर्ज कर उन्हें जेल भेज दिया गया।

चाकू लहराते युवक का वीडियो वायरल

दोस्त से कहा- 'ले, बना वीडियो', अब फरार, पुलिस बोली- जल्द करेंगे गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, बालोद (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बालोद में एक युवक का चाकू लहराते हुए वीडियो वायरल हो रहा है। वीडियो में युवक अपने दोस्तों के साथ बैठा नजर आ रहा है और हाथ में करीब 7 इंच लंबा चाकू लिए हुए है। जब उसके साथी ने इस घटना का वीडियो बनाना शुरू किया, तो युवक ने बेपरवाही से कहा - ले, बना वीडियो।

अब यह वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। जिसके बाद बालोद पुलिस हरकत में आ गई है। पुलिस ने युवक की तलाश में दबिश दी। लेकिन युवक फरार हो गया।

वीडियो पुराना बस स्टैंड में बनाया गया: बालोद में तेजी से वायरल हो रहा चाकू लहराने का वीडियो एक हफ्ते पुराना बताया जा रहा है। वीडियो में दिख रहा युवक कुर्मिपारा निवासी शुभान कुरैशी है। जो अपने पिता राजू कुरैशी के साथ कपड़ा दुकान चलाता है।

यह वीडियो पुराना बस स्टैंड स्थित एक इलेक्ट्रिक दुकान के सामने बनाया गया था। वीडियो शूट करने वाला भी उसका दोस्त है।

जल्द गिरफ्तार किया जाएगा- टीआई: बालोद टीआई रविशंकर पांडेय ने कहा कि वीडियो वायरल होने के बाद से आरोपी फरार है। लेकिन उसकी तलाश जारी है। जल्द ही उसे पकड़ा जाएगा। उन्होंने कहा कि चाकू लहराने और अवैध रूप से हथियार रखने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

पंखे से लटकती मिली नवविवाहिता की लाश

कांग्रेस नेता के बेटे से 2 महीने पहले हुई थी शादी, परिजन बोले- दामाद ने मारा

मीडिया ऑडीटर, राजनांदगांव (एजेंसी)। राजनांदगांव जिले में नवविवाहिता की लाश घर पर पंखे से लटकती मिली। मृतका की 2 महीने पहले ही शादी हुई थी। मायका पक्ष को जैसे ही इसकी जानकारी मिली सभी मौके पर पहुंचे। घर से लेकर थाने तक जमकर हंगामा मचाया। मामला घुमका थाना क्षेत्र का है।

परिजनों ने बताया कि दामाद उनकी बेटी से पैसे मांगता था। रुपए नहीं देने पर मारपीट करता था। धमकी देता था कि जो करना है कर लो वह पहले भी जेल जा चुका है। आरोपी पति घुमका के पूर्व ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष दुर्गेश द्विवेदी का बेटा है। हंगामे के बाद पुलिस ने मृतका के पति को हिरासत में रखा है। जानकारी के मुताबिक ग्राम सलोनी की रहने वाली भूमिका दुबे (24) की शादी घुमका के सोनल द्विवेदी (28) से 22 जनवरी 2025 को हुई थी। सोनल द्विवेदी ड्राइवरी का काम करता है।

शाम 6 बजे लाश पंखे से लटकती मिली: 22 मार्च की शाम करीब 6 बजे भूमिका की लाश उसके ससुराल के एक कमरे में पंखे पर लटकती मिली। ससुराल पक्ष ने बताया कि उनसे घर के ऊपर कमरे में भूमिका ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

रात करीब 8 बजे भूमिका के पिता सजीवन दुबे परिजन और गांव के लोगों के साथ घुमका पहुंचे। इसके बाद परिजन ने भूमिका के ससुराल के सामने हंगामा मचाया। परिजन ने बताया कि दामाद शादी के बाद से ही भूमिका को पैसे के लिए प्रताड़ित करता था। वहीं आरोपी पति का कहना है कि भूमिका किसी दूसरे लड़के से बात करती थी। इसलिए दोनों के बीच झगड़ा होता था।

परिजन ने जताई हत्या की आशंका: भूमिका के मायके पक्ष के लोगों ने पूरी रात घुमका में बिताई। रविवार सुबह परिजन थाने पहुंचे। जहां उन्होंने भूमिका के हत्या की आशंका जताई। परिजनों ने कहा कि भूमिका के पति ने उसकी हत्या की है।

पुलिस ने पति को हिरासत में लिया: ग्रामीणों के आक्रोश को देखते हुए पुलिस ने भूमिका के पति सोनल द्विवेदी को हिरासत में ले लिया। पुलिस ने सभी का बयान दर्ज किया है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। फिलहाल, आगे की जांच जारी है।

ब्वॉयफ्रेंड से मिलने गई 15 साल की छात्रा से गैंगरेप

प्रेमी ने दोस्तों के साथ मिलकर दी धमकी, फिर सरगुजा में 5 दिन तक किया दुष्कर्म

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के सरगुजा में प्रेमी से मिलने गई 15 साल की छात्रा से गैंगरेप हुआ है। उसके ब्वॉयफ्रेंड और दो दोस्त बदनाम करने की धमकी देकर 5 दिन तक रेप करते रहे। अब पुलिस ने तीनों आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। घटना दरिमा थाना क्षेत्र की है।

जानकारी के मुताबिक, दरिमा इलाके में रिश्तेदार के घर रहकर नाबालिग छात्रा पढ़ाई कर रही थी। 9 मार्च को अपने नाबालिग प्रेमी से मिलने गई थी। तब प्रेमी उसे अपनी बुआ के मकान में ले गया। उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। इस बीच प्रेमी के दो दोस्त यशवंत कुमार सिंह (22 साल) और सुरेंद्र सिंह (20 साल) पहुंच गए।

बदनाम करने की धमकी देकर 5 दिन तक गैंगरेप: नाबालिग स्टूडेंट को दोनों युवकों ने बदनाम करने और जान से मारने की धमकी दी। छात्रा को धमकी देकर उसके प्रेमी और दोनों युवक 5 दिन तक रात में बुलाकर गैंगरेप करते रहे। छात्रा ने डर से घटना की सूचना किसी को नहीं दी। वो प्रेमी के बुलाने पर रोज रात को घर से निकल जाती थी। दो से तीन घंटे बाद वापस चली जाती थी।

रिश्तेदारों ने मां से की थी शिकायत: छात्रा के रोज रात में गायब होने की जानकारी उसकी मां को रिश्तेदार ने दी। उन्होंने बताया कि, वो संदिग्ध रूप से गायब हो जाती है। आशंका है कि, उसे लेने लड़के आते हैं। छात्रा की मां जब किशोरी को लेने पहुंची, तो छात्रा ने पूरी आपबीती बताई।

मां के साथ बेटी ने थाने पहुंचकर की शिकायत: सरगुजा एएसपी अमोलक सिंह ने बताया कि, पीड़ित छात्रा की मां ने दरिमा थाने पहुंचकर रिपोर्ट दर्ज कराई। जिस पर दरिमा पुलिस ने मामले में नाबालिग प्रेमी, यशवंत कुमार और सुरेंद्र सिंह के खिलाफ धारा 64(2)(ढ), 70(2), 71, 3(5) बीएनएस एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया।

तीनों आरोपी गिरफ्तार, कोर्ट में किए गए पेश: गैंगरेप की शिकायत के बाद दरिमा पुलिस एक्टिव हुई। फिर सोमवार को नाबालिग समेत 3 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों को आज अंबिकापुर कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया है।

जिले में निर्वाचन प्रक्रिया को लेकर महत्वपूर्ण बैठक हुई संपन्न

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी छत्तीसगढ़ के निर्देशानुसार मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के अध्यक्ष एवं प्रतिनिधियों के साथ कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी डी. राहुल वेंकट के आदेशानुसार तथा अपर कलेक्टर अनिल कुमार सिदार के मार्गदर्शन में जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय के सभाकक्ष में आवश्यक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ निर्वाचन प्रक्रिया को लेकर आवश्यक चर्चा एवं सुझाव आमंत्रित किए गए। बैठक के दौरान अपर कलेक्टर ने राजनीतिक दलों को जानकारी दी कि निर्वाचन प्रक्रिया से संबंधित कोई भी सुझाव दिए जा सकते हैं, चाहे वह मतदाता सूची से जुड़ा ही क्यों न हो। इसके साथ ही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रतिनिधियों ने सुझाव दिया कि मतदाता सूची की पर्ची प्रत्येक घर तक पहुंचे। उन्होंने बताया कि हाल ही में हुए नगर पालिका परिषद मनेंद्रगढ़ चुनाव में केवल 25-30 प्रतिशत मतदाता पर्ची ही पहुंची। साथ ही, मनेंद्रगढ़ के वार्ड क्रमांक 4, 5 और 6 को संवेदनशील बताया गया, जिसमें एक वार्ड में अधिक मतदान केंद्र होने के कारण संघर्ष की स्थिति बनती है, इसलिए मतदान केंद्रों को अलग-अलग किया जाए। इसके अलावा, ईवीएम मशीन के प्रचार-प्रसार को ग्रामीण स्तर तक विस्तृत रूप से किया जाए। वहीं इंडियन नेशनल कांग्रेस के प्रतिनिधियों ने सुझाव दिया कि मतदान केंद्रों में मतदाता एजेंट की पहचान के बाद उन्हें वेटिंग करने की अनुमति दी जाए। मतदाता पर्ची के आधार पर मतदान करने की व्यवस्था लागू की जाए। इसके साथ ही, सीसीटीवी वेयरहाउस में 24 घंटे निगरानी की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। इसके अलावा गोंडवाना गणतंत्र पार्टी (गोंगपा) के प्रतिनिधियों ने सुझाव दिया कि चुनाव बैलेट पेपर से कराए जाएं और मतगणना उसी दिन पूरी की जाए। इस बैठक में भाजपा से आशीष सिंह, कांग्रेस से सौंपनील सिंह और देवेन्द्र बीसी तथा गोंडवाना गणतंत्र पार्टी से जगजीवन सिंहल सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

महिला डॉक्टर के रिश्वत मांगने का ऑडियो वायरल, बोली- 2 हजार में अबॉर्शन नहीं होता, धोखा दोगे तो नरक में जाओगे

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर के जिला अस्पताल में स्त्री रोग विभाग की एक महिला डॉक्टर का महिला मरीज से इलाज के नाम पर रिश्वत मांगने का ऑडियो वायरल हो रहा है। ऑडियो में महिला डॉक्टर कहती हुई सुनाई दे रही है कि 2 हजार में अबॉर्शन नहीं होता। डॉक्टर को धोखा दोगे तो नरक में जाओगे।

ऑडियो वायरल होने के बाद सिविल सर्जन ने स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. वंदना चौधरी को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। साथ ही, डॉक्टर के एमटीपी (गर्भपात संबंधी ऑपरेशन) पर रोक लगा दी है।

इस ऑडियो में मरीज और उसके परिजन 2 हजार रुपए देने और बाकी 4 हजार रुपए नहीं दे पाने की बात कह रहे हैं। इससे गुस्से में आकर डॉक्टर ने उसके साथ फोन पर दुर्व्यवहार किया।

महिला के परिजन ने सिविल सर्जन से की शिकायत: महिला के परिजन ने इसकी शिकायत सिविल सर्जन से की है। मामले में सिविल सर्जन ने जांच कराए जाने की बात कही है। ग्राम सेमरचुंआ निवासी जमंत्री पटेल नसबंदी करवाने के लिए जिला अस्पताल के स्त्री रोग वार्ड में भर्ती हुई। जिसके बाद बीते 19 मार्च को स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉक्टर वंदना चौधरी ने मरीज का ऑपरेशन किया।

6 हजार रुपए मांगने का आरोप: मरीज का आरोप है कि इलाज के नाम पर डॉ. वंदना ने 6 हजार रुपए की मांग की। परिजन ने उसे 2 हजार रुपए दिए। बाकी के 4 हजार रुपए नहीं ?दिए जाने पर वे रोज फोन कर महिला और उनके परिजन को परेशान करने लगी। महिला ने गरीबी का हवाला देकर पैसे माफ करने की बात कही। इसी बात पर डॉक्टर ने कहा कि धोखा दोगे तो ऐसे ही गरीब रहोगे।

रिश्वत के आरोप में डॉक्टर वंदना चौधरी से मांगा जवाब: इधर, रिश्वत मांगने का आरोप लगने पर सिविल सर्जन डॉक्टर अनिल गुप्ता ने स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉक्टर वंदना चौधरी को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। उन्होंने कलेक्टर के निर्देश पर यह कार्रवाई की है।

साथ ही, डॉक्टर चौधरी के परिवार नियोजन (टीटी) और एमटीपी (गर्भपात संबंधी ऑपरेशन) पर रोक लगा दी है। अब एमटीपी और टीटी ऑपरेशन का जिम्मा डॉक्टर रमा घोष और डॉक्टर ममता सलूजा संभालेंगी।

दिल्ली से बेंगलुरु जाने वाली एयर इंडिया की फ्लाइट को चेन्नई डायवर्ट की गई

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई दिल्ली से बेंगलुरु जाने वाली एअर इंडिया की फ्लाइट ए2415 को चेन्नई डायवर्ट किया गया। दावा है कि बेंगलुरु के केम्पेगौड़ा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के रनवे पर ऑपरेशनल कारणों के चलते ये फैसला लिया गया। एअर इंडिया ने भी इसकी पुष्टि की है। फ्लाइट सोमवार सुबह 9.55 बजे दिल्ली से रवाना हुई थी। इसे दोपहर 12.50 बजे बेंगलुरु लैंड होना था। चेन्नई लैंड होने के बाद दोपहर 1.38 पर प्लेन में फ्यूल भरा गया और बेंगलुरु रवाना किया गया।

जम्मू के कठुआ में आतंकियों के एनकाउंटर का दूसरा दिन

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू के कठुआ में नियंत्रण रेखा के पास हीरानगर सेक्टर में सोमवार सुबह सुरक्षाबलों का सर्च ऑपरेशन जारी है। रविवार शाम 6ः30 बजे आतंकियों के साथ मुठभेड़ शुरू हुई थी। विजिबिलिटी कम होने के बाद एनकाउंटर रोका गया था। सुबह होते ही दोबारा शुरू हुआ। सुरक्षाबलों को इनपुट मिला था कि पांच-छह आतंकियों के दो ग्रुप ने 22 मार्च को घुसपैठ की है। इसके बाद बीते दिन एलओसी से 5 किमी दूर सान्याल गांव में एक नर्सरी के बाड़े में आतंकियों की मौजूदगी की खबर मिली। सर्चिंग के दौरान सुरक्षाबलों पर आतंकियों ने फायरिंग शुरू कर दी। आतंकियों की गोली से 7 साल की बच्ची घायल हो गई। लकड़ी इकट्ठा कर रही एक महिला ने बताया कि आतंकवादियों ने उसके पति को उस समय पकड़ लिया और उसे भी पास आने को कहा, लेकिन पति के इशारे पर वह भाग निकली। महिला की आवाज सुनकर पास ही घास काट रहे दो और लोग वहां आ गए। इस बीच उसका पति भी आतंकियों से बच निकला। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। महिला ने बताया कि पांच आतंकी थे। सभी दाढ़ी रखे हुए थे और कमांडो ड्रेस पहने हुए थे।

शिमला में लैंडिंग के दौरान इमरजेंसी ब्रेक से रुका प्लेन

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के शिमला में जुब्बड़हट्टी एयरपोर्ट पर सोमवार सुबह एलायंस एयर की फ्लाइट 9टी821 (क्रप्लेन) की इमरजेंसी लैंडिंग हुई। घटना के दौरान प्लेन में 42 पैसेंजर और 2 क्रू समेत 44 लोग सवार थे। प्लेन में हिमाचल के डिप्टी सीएम मुकेश अग्निहोत्री और डीजीपी डॉ. अतुल वर्मा भी सवार थे। दोनों दिल्ली से शिमला लौट रहे थे। अधिकारियों ने बताया- दिल्ली से शिमला के बीच चलने वाली डोमेस्टिक फ्लाइट की लैंडिंग के दौरान टेक्निकल प्रॉब्लम हुई। इसके कारण रनवे पर प्लेन की स्पीड नहीं हुई, पायलट ने इमरजेंसी ब्रेक लगाकर प्लेन रोका। जुब्बड़हट्टी एयरपोर्ट पहाड़ी पर है। इसका रनवे 1200 मीटर लंबा है। इसके टेकऑफ और लैंडिंग दोनों एंड के बाद खाई है। रिपोर्ट्स में सामने आया कि प्लेन खाई की तरफ बढ़ रहा था, जिसे देख यात्री रोने-चिल्लाने लगे थे। अधिकारियों ने बताया कि ये फ्लाइट सुबह दिल्ली से शिमला आती है। इसके बाद शिमला से धर्मशाला, धर्मशाला से शिमला जाती है। शाम में वापस शिमला से दिल्ली जाती है। घटना के चलते अगली तीनों फ्लाइट रद्द कर दी गईं।

ओलावृष्टि से हुई फसल नुकसानी का सर्वे कर आपदा राहत शीघ्र की जाए प्रदान : मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक से पहले विक्रमादित्य ध्वज और पुस्तिका भारत का नव वर्ष विक्रम संवत का विमोचन कर अपने संबोधन में कहा कि संपूर्ण प्रदेश में 30 मार्च को गुड़ी पड़वा का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा, मंत्रीगण गुड़ी पड़वा पर उनके जिलों में होने वाले कार्यक्रमों में सहभागिता करें। विक्रम महोत्सव के अंतर्गत नई दिल्ली में 12-13-14 अप्रैल को विशेष आयोजन होने जा रहे हैं, जिसमें सम्राट विक्रमादित्य पर केंद्रित महानाट्य की प्रस्तुति भी होगी। सम्राट विक्रमादित्य के व्यक्तित्व और शासन व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित महान महानाट्य की प्रस्तुति प्रदेश के प्रमुख शहरों में भी की जाएगी। इसके साथ ही सेक्टर वार होने वाली इन्वेस्टर्स समिट तथा अन्य बड़े आयोजनों के अवसर पर भी सम्राट विक्रमादित्य पर केंद्रित महानाट्य की प्रस्तुति की जाए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विमोचित पुस्तिका भारत का नव वर्ष विक्रम संवत के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि पुस्तिका में विक्रम संवत, काल गणना की पद्धति, प्राचीन यंत्रों , वैदिक घड़ी आदि के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विक्रम संवत के अंतर्गत तिथियों की महत्ता, पर्व और त्योहारों के निर्धारण तथा काल गणना पद्धति पर प्रकाश डाला। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि निवेश प्रस्तावों को धरातल पर मूर्त रूप देने के लिए गतिविधियां जारी हैं। इस क्रम में 21 मार्च को ग्वालियर क्षेत्र में 18 औद्योगिक इकाइयों का भूमि-पूजन किया गया। जिनमें 11 मुरैना, सात ग्वालियर और एक इकाई का भिंड में भूमि-पूजन संपन्न हुआ। इस क्रम में कल उज्जैन संभाग की 25 इकाइयों का भूमि-पूजन होने जा रहा है, जिसमें उज्जैन की 13 और संभाग के अन्य स्थानों की 12 इकाइयां शामिल हैं। संभागवार यह क्रम निरंतर जारी रहेगा ।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार पर्यावरण संरक्षण तथा वन्य जीव संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है । इस क्रम में प्रदेश में दो अभयारण को मूर्त रूप देने के बाद राज्य सरकार वाइल्ड लाइफ सैंक्च्यूरी विकसित करने की ओर अग्रसर है।

सांसदों की सैलरी 24 प्रतिशत बढ़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकार ने सांसदों की सैलरी में 24 प्रतिशतका इजाफा कर दिया है। सोमवार को संसदीय कार्य मंत्रालय ने इसकी अधिसूचना जारी की। इसके मुताबिक मौजूदा सांसदों को अब 1.24 लाख रुपए प्रति माह मिलेगा। पहले उन्हें 1 लाख रुपए प्रति माह मिलते थे। यह बढ़ोतरी कॉस्ट इन्फ्लेशन इंडेक्स (लागत मुद्रास्फीति सूचकांक) के आधार पर की गई है। बढ़ी हुई सैलरी 1 अप्रैल 2023 से लागू होगी। इससे पहले मोदी सरकार ने 2018 में सांसदों के वेतन और भत्तों की हर पांच साल में समीक्षा का नियम बनाया था। यह समीक्षा महंगाई दर पर आधारित होती है। डेली अलाउंस और पेंशन भी बढ़ाई गई है। डेली अलाउंस 2 हजार रुपए से बढ़ाकर 2,500 कर दिया गया है। पूर्व सांसदों की पेंशन 25 हजार रुपए से प्रति माह से बढ़ाकर 31 हजार रुपए प्रति माह कर दी गई है। पांच साल से ज्यादा समय तक सांसद रहे सदस्यों को हर साल के लिए मिलने वाली एक्स्ट्रा पेंशन भी 2 हजार रुपए प्रति माह से बढ़ाकर 2,500 रुपए प्रति माह कर दी गई है। 34 हवाई यात्राएं, फर्स्ट एसी में सीटः प्रत्येक सांसद एक साल में 34 फ्री हवाई यात्राएं कर सकता है। सांसद चाहे तो 8 यात्राओं को अपने सहयोगियों या स्टाफ को ट्रांसफर कर सकते हैं। उन्हें भारतीय रेलवे की सभी क्लास में मुफ्त यात्रा की सुविधा मिलती है। यह सुविधा संसद सत्र के दौरान और बाद भी मिलती है। सड़क यात्रा के लिए ?16 प्रति किमी तक का भत्ता दिया जाता है। यह तब लागू होता है जब सांसद किसी आधिकारिक कार्य के लिए सड़क से यात्रा करते हैं और हवाई या रेल यात्रा संभव नहीं होती।

संसद सत्र के दौरान सांसदों को दिल्ली में परिवहन सुविधा प्रदान की जाती है।

कॉलेजियम ने जस्टिस वर्मा के ट्रांसफर की सिफारिश की

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा को उनके पैरेंट कोर्ट (इलाहाबाद हाईकोर्ट) वापस ट्रांसफर करने की सिफारिश का प्रस्ताव जारी कर दिया है। सीजेआई संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाले कॉलेजियम ने ये सिफारिश की है। 20 और 24 मार्च 2025 को हुई बैठकों में सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा को इलाहाबाद हाईकोर्ट वापस भेजने की सिफारिश की है। वहीं, इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन ने सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम के इस फैसले पर आपत्ति जताई है। 23 मार्च को दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा को वापस इलाहाबाद भेजने की बात का इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन ने विरोध किया था। बार ने जनरल हाउस मीटिंग बुलाई थी। जिसमें जस्टिस वर्मा के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाने की मांग का प्रस्ताव पारित किया गया था।

साथ ही मामले की जांच श्वष्ठ और सीजेआई से कराने की मांग का भी प्रस्ताव पारित किया गया था। प्रस्ताव की कॉपी सुप्रीम कोर्ट सीजेआई को भी भेजी गई है। जस्टिस यशवंत वर्मा के लुटियंस दिल्ली स्थित घर में 14 मार्च की रात आग लगी। उनके घर के स्टोर रूम जैसे कमरे में 500-500 रुपए के जले नोटों के बंडलों से भरे बोरे मिले। सवाल खड़ा हुआ कि इतना कैश कहां से आया।

नागपुर हिंसा- मुख्य आरोपी फहीम के घर पर बुलडोजर चला

मुंबई (एजेंसी)। औरंगजेब की कब्र हटाने को लेकर नागपुर में हुई हिंसा के मुख्य आरोपी फहीम खान के घर पर सोमवार को बुलडोजर चलाया गया। हिंसा के एक और आरोपी यूसुफ शेख के घर का अवैध निर्माण भी तोड़ा गया है। नागपुर नगर निगम ने संजय बाग कॉलोनी, यशोधरा नगर में मौजूद फहीम के मकान का अवैध निर्माण हटाने के लिए रविवार को 24 घंटे का समय दिया था, जो सोमवार को पूरा हो गया। फहीम का मकान उसकी पत्नी के नाम पर है। नगर निगम ने इसकी बिल्डिंग परमिशन अप्रूवल में गड़बड़ी को लेकर कार्रवाई का नोटिस दिया था। नागपुर में 17 मार्च को औरंगजेब की कब्र हटाने को लेकर विवाद के बाद हिंसा हुई है। इसके मास्टरमाइंड फहीम समेत 6 आरोपियों के खिलाफ देशद्रोह का केस दर्ज है। फहीम पर 500 से ज्यादा दंगाइयों को इकट्ठा करने और हिंसा को बढ़ावा देने का आरोप है। माइनॉरिटीज डेमोक्रेटिक पार्टी के शहर अध्यक्ष फहीम खान को दंगा और आगजनी की घटनाओं के दो दिन बाद 19 मार्च को गिरफ्तार किया गया था। वह अभी पुलिस हिरासत में हैं। फहीम ने 21 मार्च को सेशंस कोर्ट में जमानत के लिए याचिका लगाई थी। उसका दावा है कि उसे राजनीतिक प्रतिशोध के चलते गिरफ्तार किया गया है, क्योंकि उसने विश्व हिंदू परिषद कार्यकर्ताओं के खिलाफ कार्रवाई की मांग की थी।

दिल्ली विधानसभा का बजट सत्र, खीर सेरेमनी के साथ शुरुआत

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा का बजट सत्र सोमवार को खीर सेरेमनी के साथ शुरू हो गया। सत्र शुरू होने से पहले इस तरह का आयोजन पहली बार हुआ है। समारोह में हिस्सा लेने के लिए कई ऑटो चालक, व्यापारी और दुकानदार भी विधानसभा पहुंचे थे। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा- खीर की मिठास जैसे बजट को भगवान राम को अर्पित किया गया है और अब यह उन लोगों को परोसा जाएगा जिन्होंने अपने सुझाव दिए हैं। दिल्ली की भाजपा सरकार मंगलवार को अपना पहला बजट पेश करेगी। सीएम रेखा गुप्ता ने दिल्ली ट्रांसपोर्ट को-ऑपरेशन के कामकाज पर एलजी रिपोर्ट सदन में पेश की। इसके बाद भाजपा विधायक हरीश खुराना ने आप सरकार पर डीटीसी के कुप्रबंधन का आरोप लगाया। खुराना ने कहा कि 2015 में डीटीसी बसों की संख्या 4,344 से घटकर 3,937 रह गई। डीटीसी को होने वाली आय भी आप के सत्ता में आने के समय 914 करोड़ रुपए से घटकर 558 करोड़ रुपए रह गई। इसके अलावा आज ही डिप्टी स्पीकर मोहन सिंह बिष्ट और विधायक ओपी शर्मा बिजनेस एडवाइजरी कमेटी की पहली रिपोर्ट पेश करेंगे। बजट सत्र 28 मार्च तक चलेगा।

कर्नाटक डिप्टी सीएम के बयान पर संसद में हंगामा

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद में बजट सत्र के दूसरे फेज के 9वें दिन कर्नाटक के डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार के एक बयान पर राज्यसभा में हंगामा हुआ।

इसके चलते सदन की कार्यवाही पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई। इससे पहले सदन 2 बजे तक स्थगित किया गया। दोबारा कार्यवाही शुरू होने पर फिर हंगामा हुआ, तो राज्यसभा पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई। दरअसल, डिप्टी सीएम शिवकुमार ने 23 मार्च को कर्नाटक के एक कार्यक्रम में मुस्लिम आरक्षण के मुद्दे पर कहा था कि संविधान बदल देंगे। सोमवार को राज्यसभा की कार्यवाही शुरू होते ही संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने यह मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा- कांग्रेस ने बाबासाहेब अंबेडकर के संविधान का अपमान किया है। जवाब में मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा- बाबासाहेब के संविधान को कोई नहीं बदल सकता।

आरक्षण को कोई खत्म नहीं कर सकता। इसकी रक्षा के लिए हमने भारत जोड़ो यात्रा की। आप भारत तोड़ रहे हैं। वहीं, मामला बढ़ने पर कर्नाटक के डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार ने कहा, मैंने संविधान बदलने की बात नहीं कही। ये लोग गलत बातें फैला रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय पार्टी है। लोकसभा की कार्यवाही दोबारा शुरू लोकसभा में भी सोमवार को भाजपा ने मुस्लिम आरक्षण का मुद्दा उठाया। सपा सांसद पोस्टर लेकर सदन में आए। इस पर स्पीकर ओम बिरला ने आपत्ति जताई और सदन 12 बजे तक स्थगित कर दिया। 12 बजे सदन की कार्यवाही दोबारा शुरू होने पर रिजिजू सदन पहुंचे और कर्नाटक के डिप्टी श्ट्रू को बर्खास्त करने की मांग की। इस पर हंगामा हुआ और सदन 2 बजे तक स्थगित कर दिया गया। सदन की कार्यवाही दोबारा शुरू होने पर 2025 के बजट पर चर्चा चल रही है।

पंजाब पुलिस बोली- जगजीत डल्लेवाल गिरफ्तार नहीं

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब पुलिस की तरफ से पटियाला के एसएसपी नानक सिंह ने पंजाब एंड हरियाणा हाईकोर्ट में स्टेटस रिपोर्ट दाखिल की। इस संबंध में याचिका दायर हुई थी। जिसमें दावा किया गया था कि डल्लेवाल को अवैध हिरासत में रखा गया है।

पंजाब पुलिस ने कोर्ट को यह भी बताया कि डल्लेवाल के खिलाफ न ही कोई मामला दर्ज किया गया और न ही उनकी गिरफ्तारी हुई है। इसके बाद कोर्ट ने परिवार के सदस्यों को डल्लेवाल से मिलने की अनुमति दी। इस मामले में अगले सुनवाई 26 मार्च को होगी।

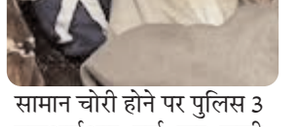

वहीं इस सुनवाई के बाद पंजाब पुलिस के ह्वह्न (हेडक्वार्टर) सुखचैन सिंह गिल ने कहा- करीब 1400 किसानों को हिरासत में लिया गया था। पुलिस ने 800 किसानों को रिहा किया है। जिन महिलाओं की उम्र 60 साल से ज्यादा है, या उन्हें कोई मेडिकल प्रॉब्लम है, उन्हें भी रिहा किया जाएगा। करीब 450 किसान आज रिहा किए जाएंगे। बॉर्डरों पर किसानों के सामान चोरी होने पर पुलिस 3 एफआईआर दर्ज कर चुकी है। भारतीय किसान यूनियन दोआबा के प्रधान गुरमुख सिंह ने 21 मार्च को इस याचिका को दाखिल किया था। जिसमें उन्होंने कहा था कि डल्लेवाल 117 दिनों से आमरण अनशन पर हैं। उन्हें कैंसर है। 19 मार्च से उनका कोई पता नहीं है। वैसे तो 400 से अधिक किसानों को हिरासत में लिया गया है। 50 किसानों के नाम की सूची उन्होंने अदालत को सौंपी थी।

उधर, आंदोलनकारी संगठन संयुक्त किसान मोर्चा (नॉन पॉलिटिकल) और किसान मजदूर मोर्चा (च्यरूरू) ने आज मोहाली में प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई है। किसान नेता अगली रणनीति के बारे में बताएंगे।

दिल्ली में इंडिया गठबंधन के छात्र संगठनों का प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। विपक्ष के नेता राहुल गांधी की अगुआई में सोमवार को जंतर-मंतर पर इंडिया गठबंधन के छात्र संगठनों ने देशभर में बेरोजगारी के मुद्दे को लेकर प्रदर्शन किया। छात्र संगठन नेशनल एजुकेशन पॉलिसी नियुक्तियों पर यूजीसी के प्रस्तावित दिशा-निर्देशों को वापस लेने और छात्र संघों को बहाल करने की मांग कर रहे हैं। राहुल गांधी ने कहा कि देश में सबसे बड़ा मुद्दा रोजगार का है और सरकार इस मुद्दे पर चुप है। राहुल बोले हम छात्र हितों से समझौता नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि ऋस्स् देश के एजुकेशन सिस्टम को खत्म कर रहा है और आने वाले वक्त में किसी को रोजगार नहीं मिलेगा।

राहुल ने कहा, एक संगठन हिंदुस्तान के भविष्य को, एजुकेशन सिस्टम को खत्म करने में लगा है। उसका नाम आरएसएस है। सच्चाई है कि हमारा शिक्षा का सिस्टम धीरे-धीरे उनके हाथों में जा रहा है। अगर सिस्टम उनके हाथों में चला जाएगा तो देश बर्बाद हो जाएगा। किसी को रोजगार नहीं मिलेगा। जंतर-मंतर पर राहुल गांधी के 4 बयान 1. राहुल ने कहा, ये आपकी जिम्मेदारी है कि छात्रों को बताया जाए कि यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर ऋस्स् के हैं। आने वाले समय में सभी यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर ऋस्स् के नॉमिनेशन से बनेंगे। ये देश के लिए खतरनाक है। हमें इसे रोकना होगा।

2. राहुल बोले, कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री ने कुंभ पर भाषण दिया। इस पर बोलना अच्छा है, लेकिन आपको भविष्य पर भी बात करनी चाहिए। बेरोजगारी पर बात करनी चाहिए, जो देश के युवाओं को बेरोजगार किया जा रहा है, उस पर बात करनी चाहिए।

3. कांग्रेस सांसद ने कहा, प्रधानमंत्री महंगाई, बेरोजगारी के बारे में एक शब्द नहीं बोलते हैं। प्रधानमंत्री का मॉडल है अंबानी-अडाणी को देश का धन दिलाना, आरएसएस को देश के सारे संस्थान पकड़ा देना। हमें इसका विरोध करना है।

4. राहुल ने कहा, ऐसा विरोध देश के कोने-कोने में कीजिए, हर गली मोहल्ले, हर यूनिवर्सिटी में कीजिए। जहां आप ले जाना चाहेंगे मैं आपके साथ चलूंगा। आप छात्र हो।

यहां अलग-अलग पार्टियां हैं, विचारधारा में थोड़ा-थोड़ा फर्क हो सकता है, लेकिन हिंदुस्तान का एजुकेशन सिस्टम है, उससे हम कभी समझौता नहीं करेंगे। एकसाथ बढ़ेंगे, ऋस्स् और भाजपा को हराएंगे।

राजस्थान में 40, एमपी में 39 डिग्री पहुंचा तापमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। मध्यप्रदेश में ओले-बारिश और आंधी का दौर रविवार से थम गया। अगले 3 दिन तक पारे में बढ़ोतरी होगी। पारा 3 से 4 डिग्री तक बढ़ सकता है। मौसम विभाग के मुताबिक, 25-26 मार्च से प्रदेश में नए सिस्टम का असर देखने को मिलेगा। राजस्थान में अगले तीन दिन उत्तर-पूर्वी हवा के असर से तापमान में मामूली उतार-चढ़ाव होने की और आसमान साफ रहने की संभावना जताई है। इस दौरान अधिकांश शहरों का अधिकतम तापमान 33 से 38 डिग्री सेल्सियस के बीच दर्ज हो सकता है।

उधर, ओडिशा में लगातार चौथे दिन बारिश का अलर्ट है। अब तक बारिश, आंधी और बिजली गिरने से दो लोगों की मौत हो गई। 67 अन्य घायल हो गए और 600 से अधिक घर क्षतिग्रस्त हो गए।राज्यों में मौसम का हाल... राजस्थान में फिर बारिश की संभावनाः दो दिन बाद मिल सकती है राहत, तापमान 40 डिग्री के पार पहुंचा राजस्थान में मौसम बदलने का सिलसिला लगातार जारी है। 26 मार्च को प्रदेश में एक नया पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होगा। इससे प्रदेश के कुछ इलाकों में मामूली बारिश होने की सम्भावना है। रविवार (23 मार्च) को प्रदेश के अधिकतम तापमान में एक से 3.6 डिग्री सेल्सियस तक की बढ़ोतरी हुई है।

इसके बाद बाड़मेर का अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस को पार कर गया

आईपीएल उद्घाटन समारोह में अभिनेत्री दिशा पाटनी अपने ड्रेस को लेकर ट्रॉल हुई

मुम्बई (एजेंसी)। आईपीएल के उद्घाटन समारोह में अभिनेत्री दिशा पाटनी अपनी ड्रेस को लेकर ट्रॉल हो रही हैं। सोशल मीडिया पर लोग उनके पहनावे की आलोचना करते दिखे हैं। कोलकाता के ईडन गार्डन्स में हुए इस समारोह में दिशा ने अपने कार्यक्रम से सभी का ध्यान खींचा पर उनकी ड्रेस पर लोगों ने सवाल उठाये हैं। दिशा की ड्रेस को लेकर सोशल मीडिया पर कई लोगों ने नाराजगी जतायी है। कई सोशल मीडिया यूजर्स ने कहा कि इस प्रकार के ड्रेस की ड्रेस देखकर परिवार के साथ आये लोगों को असहज लगा। दिशा ने कार्यक्रम के दौरान आइवरी ब्रालेट और मैचिंग स्कर्ट पहनी हुई थी। कई लोगों ने कार्यक्रम की सराहना की पर कहा कि जिस प्रकार की ड्रेस पहनकर वह आयीं। इसकी अनुमति भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) को नहीं देनी चाहिये थी। एक यूजर ने सोशल मीडिया में लिखा, 'बीसीसीआई ने ये जानते हुए कि ये सब परिवारों और बच्चे भी देखते हैं, फिर भी इस तरह की द्र ड्रेस के साथ कार्यक्रम की अनुमति कैसे दे दी जबकि दूसरे यूजर ने लिखा, 'ये हरकत खेल आयोजन के लिए सही नहीं कही जा सकती है। कई लोगों ने कहा कि आईपीएल बच्चे भी देखते हैं, ऐसे में बीसीसीआई को सभी बातों का ध्यान रखना चाहिये था।

विराट कोहली को गले लगाने वाला फैन हुआ गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के लिए आईपीएल 2025 की शुरुआत शानदार हुई है। पहले मैच में आरसीबी ने केकेआर को 7 विकेट से हराया। विराट कोहली ने इस मैच में 59 रनों की नाबाद पारी खेली। उनके अर्धशतक के बाद एक फैन ईडन गार्डन्स ग्राउंड पर घुस आया था, जो कोहली के पास पहुंच गया। फैन पहले कोहली के पैरों में गिर गया और फिर उन्हें गले लगा लिया। सुरक्षाकर्मी आए और उसे पकड़कर मैदान से बाहर कर दिया। वहीं पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है।

बता दें कि, रिपोर्ट्स के अनुसार फैन पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 329 के तहत मामला दर्ज हुआ है। ये धारा तब लागू होती है जब कोई व्यक्ति बिना किसी वैध अनुमति या अधिकार के किसी संपत्ति में प्रवेश करता है। सोशल मीडिया पर विराट कोहली के इस पैन की कई वीडियो वायरल हो रही है। एक वीडियो से साफ हो रहा है कि कैसे वह एक जाली लगी हुई ग्रिल को फांदकर ग्राउंड के अंदर जा रहा है। विराट कोहली को लेकर ऐसी दिवानगी अक्सर देखी जाती है। इससे पहले भी कई विराट के फैंस ग्राउंड पर घुस आए हैं। इस मैच में रजत पाटीदार ने टॉस जीतकर केकेआर को बल्लेबाजी का निमंत्रण दिया था। अजिंक्य रहाणे और सुनील नारायण की 103 रनों की साझेदारी से केकेआर की शुरुआत अच्छी हुई थी। क्रुणाल पंड्या ने शानदार स्पेल डालकर आरसीबी की वापसी कराई थी और केकेआर को 174 पर रोक दिया था।

क्रुणाल पंड्या ने अपने 4 ओवरों के स्पेल में 29 रन देकर 3 विकेट चटकाए थे।

केकेआर के कप्तान अजिंक्य रहाणे ने किया खुलासा

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल के 18वें सीजन का आगाज तो हो गया, लेकिन पिछले साल की चैंपियन टीम केकेआर की शुरुआत बेहद खराब रही। कोलकाता नाइट राइडर्स को अपने पहले ही मुकाबले में आरसीबी के हाथों 7 विकेट से हार मिली।

हालांकि, मुकाबले में केकेआर की शुरुआत अच्छी रही लेकिन टीम उसे जीत में नहीं बदल सकी। मैच के बाद टीम के कप्तान अजिंक्य रहाणे ने टीम की हार की बड़ी वजह बताई। केकेआर ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवरों में 8 विकेट के नुकसान पर 174 रन बनाए। जिसे आरसीबी ने 17वें ओवर की दूसरी ही गेंद पर हासिल कर लिया। कोहली ने नाबाद 59 रनों की पारी खेली जिसमें उन्होंने 36 गेंदों का सामना भी करते हुए चार चौके और तीन छक्के भी जड़े। जबकि फिल सॉल्ट ने 31 गेंदों पर 9 चौके और दो छक्कों की मदद से 56 रन बनाए। रहाणे आईपीएल में पहली बार कोलकाता की कप्तानी कर रहे हैं। उन्होंने इस मैच में तूफानी अंदाज दिखाया और फिफ्टी ठोकी। उन्होंने 31 गेंदों पर 6 चौके और चार छक्कों की मदद से 56 रन बनाए। रहाणे ने कहा कि उनकी टीम ने शुरुआत तो अच्छी की लेकिन जैसे ही उनका विकेट गिरा टीम राह भटक गई। रहाणे ने मैच के बाद कहा कि, हम 13वें ओवर तक अच्छा खेले, लेकिन 2-3 विकेट ने पूरा मोमेंटम बदल लिया। हमें अपनी गलतियों से सीखना होगा।

पैरालंपियन शीतल देवी ने पायल को हराकर तीरंदाजी में स्वर्ण पदक जीता

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर की बिना हाथ की तीरंदाज और पैरालंपिक पदक विजेता शीतल देवी ने रविवार को यहां खेलो इंडिया पैरा खेलों के बहुप्रतीक्षित मुकाबले में ओडिशा की दिव्यांग (बिना हाथ, बिना पैर) पायल नाग को हराकर स्वर्ण पदक जीता। जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में दोनों युवाओं के बीच मुकाबले में गत विजेता शीतल ने वापसी करते हुए खेलों का अपना दूसरा स्वर्ण पदक जीता। 18 वर्षीय शीतल ने कंपाउंडडनरी ओपन फाइनल मैच में 17 वर्षीय पायल के खिलाफ 109-103 से जीत दर्ज की। पायल के दोनों हाथ और दोनों पैर नहीं हैं। वह बचपन में बिजली का झटका लगने के कारण अपने हाथ-पैर खो बैठी थीं और वह कृत्रिम पैरों से निशाना लगाती हैं।

राकेश कुमार (40 वर्ष) और ज्योति बालियान (30 वर्ष) ने भी अपने-अपने मुकाबलों में स्वर्ण पदक जीते। झारखंड के विजय सुंडी ने हरियाणा के विकास भाकर को पुरुष रिकर्व ओपन स्वर्ण पदक मैच में 6-4 से हराया जबकि हरियाणा की पूजा ने महाराष्ट्र की राजश्री राठौड़ को 6-4 से हराकर महिला

रिकर्व ओपन स्वर्ण पदक जीता। सभी की निगाहें शीतल और पायल के बीच महिलाओं के कंपाउंड स्वर्ण पदक मैच पर थीं।

शीतल ने आठ और सात के स्कोर के साथ शुरुआत की जबकि पायल ने डबल 10 के साथ शुरुआत की। हालांकि पायल तीसरे दौर में बढ़त खो बैठीं, जहां उन्होंने पहली बार सात का स्कोर बनाया और शीतल ने नौ और 10 के अपने लगातार सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर वापसी की। निर्णायक पांचवें दौर में शीतल ने स्वर्ण पदक जीता।

शीतल ने साइ मीडिया से कहा, ''पायल फाइनल में बहुत अच्छा खेली और अपनी निरंतर मेहनत से वह जल्द ही भारत के लिए पदक जीतेगी। मैं माता रानी के आशीर्वाद के लिए आभारी हूं कि मैंने खेलो इंडिया पैरा खेल में अपना दूसरा स्वर्ण पदक जीता।'' पायल ने अपने पहले खेलो इंडिया पैरा खेल में खेल के तकनीकी पहलुओं के बारे में बात की। उन्होंने कहा, ''पहले मैं अपने कृत्रिम पैरों में दो उपकरणों के साथ तीर चलाती थी, लेकिन अब मैं सिर्फ एक पैर से तीर चलाती हूं। इससे तालमेल बिठाने में समस्या थी, लेकिन मैं असुविधा के बावजूद फाइनल में पहुंच गई और आज बहुत तेज हवा चल रही थी। लेकिन मैं फाइनल में प्रतिस्पर्धा करके और रजत पदक जीतकर खुश हूं।''

पुरुषों के कंपाउंड ओपन स्वर्ण पदक मैच में राजस्थान के श्याम सुंदर स्वामी ने छत्तीसगढ़ के तोमन कुमार को कड़ी टक्कर देते हुए 140-139 से हराया। कांस्य पदक मैचों में राकेश कुमार ने अपनी निरंतरता का परिचय देते हुए हरियाणा के परमेंद्र को 143-140 से हराया। ज्योति बालियान ने दिल्ली की लालपति को 136-132 से हराकर स्वर्ण पदक जीता। राजस्थान के धन्ना गोदारा और झारखंड की सुकृति सिंह ने क्रमशः पुरुषों और महिलाओं के रिकर्व ओपन कांस्य पदक जीते।

हैदराबाद के बल्लेबाजों ने जोफा आर्चर की कुटाई कर दी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 के दूसरे मैच में हैदराबाद ने राजस्थान के खिलाफ गजब की बैटिंग करते हुए 20 ओवर में 6 विकेट पर 286 रन बना दिए और ये आईपीएल इतिहास का दूसरा सबसे बड़ा स्कोर रहा। इस मैच में हैदराबाद ने इशान किशन की नाबाद 106 रन की पारी के दम पर इस टीम के खिलाफ विशाल स्कोर बनाने में मदद की तो वहीं हेड ने भी इस मैच में 67 रन की बेहतरीन पारी खेली। इस मैच के दौरान राजस्थान के गेंदबाजों की जमकर कुटाई हैदराबाद के बैटर्स ने की और सबसे ज्यादा रन जोफा आर्चर ने लुटाए। इस मैच में जोफा ने इतने रन दे दिए कि वो आईपीएल के

एक मैच में सबसे ज्यादा रन देने वाले बॉलर की लिस्ट में पहले स्थान पर आ गए तो वहीं हेनरिक क्लासेन ने अपनी पारी के दम पर वीरेंद्र सहवाग ने इस रिकॉर्ड को तोड़ दिया। जोफा आर्चर ने हैदराबाद के खिलाफ हुए मैच में 4 ओवर में 76 रन दिए और उन्हें कोई भी विकेट नहीं मिला। इसके बाद वो इस लीग के एक मैच में सबसे ज्यादा रन देने वाले बॉलर की लिस्ट में पहले नंबर पर आ गए और मोहित शर्मा को पीछे छोड़ दिया। मोहित ने साल 2024 में दिल्ली के खिलाफ अपने 4 ओवर के स्पैल में 73 रन दिए थे, लेकिन अब जोफा उनसे आगे आ गए।

राजस्थान के खिलाफ इस मैच में क्लासेन ने 14 गेंदों पर छक्का और 5 चौकों की मदद से 34 रन की पारी केली और इस लीग में 1000 रन पूरे करते हुए सहवाग को पीछे छोड़ दिया। क्लासेन आईपीएल में सबसे कम गेंदों पर 1000 रन पूरे करने वाले बैटर्स की लिस्ट में अब दूसरे नंबर पर आ गए। क्लासेन ने ये कमा 594 गेंदों पर किया जबकि सहवाग ने ऐसा 604 गेंदों पर किया था। इस लिस्ट में पहले नंबर पर आंद्रे रसेल थे जिन्होंने 545 गेंदों पर अपने 1000 रन पूरे किए थे।

चेपॉक में रोहित शर्मा के नाम शर्मनाक रिकॉर्ड, 18वीं बार हुए डक पर आउट

नई दिल्ली (एजेंसी)। रोहित शर्मा इंडियन प्रीमियर लीग के इतिहास में सबसे ज्यादा बार शून्य के स्कोर पर आउट होने के मामले में सबसे ऊपर आ गए हैं। उन्हें चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ मैच में खलील अहमद ने शिवम दुबे के हाथों कैच करवाया। ये आईपीएल इतिहास में 18वीं बार है जब रोहित शर्मा शून्य के स्कोर पर आउट हुए हैं। अब आईपीएल में सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने के मामले में उन्होंने दिनेश कार्तिक और ग्लेन मैक्सवेल की बराबरी कर ली है। रोहित चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ मैच में 0 रन बनाकर आउट हुए हैं। वो राजस्थान रॉयल्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ भी चार-चार बार खाता तक नहीं खोल पाए थे। बता दें कि, दिनेश कार्तिक, ग्लेन मैक्सवेल और रोहित शर्मा अब अपने-अपने आईपीएल करियर में 18 बार शून्य के स्कोर पर आउट हुए हैं।

रोहित शर्मा अपने आईपीएल करियर में 7 हजार रन बनाने के बेहद करीब हैं। उन्होंने अभी तक अपने करियर में 6,628 रन बनाए हैं और 7 हजार का आंकड़ा छूने के लिए उन्हें 372 रनों की जरूरत है। वो अगर ऐसा कर लेते हैं तो रोहित ऐसा करने वाले केवल दूसरे खिलाड़ी बन जाएंगे। अभी तक ऐसा करने वाले एकमात्र प्लेयर विराट कोहली हैं, जो अब तक अपने करियर में 8,063 रन बना चुके हैं।

कौन हैं सत्यनारायण राजू? आंध्र प्रीमियर लीग से चर्चा में आया था ये गेंदबाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुंबई इंडियंस ने आईपीएल 2025 के पहले मैच में चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ पहले मैच में सत्यनारायण राजू को प्लेइंग 11 में शामिल किया। ये उनका आईपीएल डेब्यू मैच है। वह आंध्र प्रीमियर लीग 2024 में बेहतरीन गेंदबाजी से चर्चा में आए थे। उन्हें मुंबई इंडियंस ने 30 लाख रुपये में आईपीएल 2025 के लिए खरीदा था। सत्यनारायण राजू आंध्र प्रीमियर लीग 2024 में बेहतरीन प्रदर्शन के बाद सुर्खियों में आए थे। दाएं हाथ के तेज गेंदबाज ने 7 मैचों में 6.15 की अच्छी इकॉनमी से आठ विकेट चटकाए थे, जिससे रायलसीमा किंग्स ट्रॉफी के करीब पहुंच गई। सत्यनारायण ने कुल टी20 मैच खेले

हैं, इसमें उन्होंने 8.23 की इकॉनमी से 7 विकेट चटकाए हैं। उन्होंने 8 फर्स्ट क्लास मैचों में 3.58 की इकॉनमी से 17 विकेट लिए हैं। लिस्ट ए के 7 मैचों में उन्होंने 9 विकेट लिए हैं। क्रिकेटर सत्यनारायण राजू का पूरा नाम पेनुमतसा वेंकटा सत्यनारायण राजू हैं। सत्यनारायण राजू कोनसीमा जिले के ममिडिकुदुरु मंडल के गोगन्नामथम से ताल्लुक रखते हैं। हालांकि, उनका परिवार पिछले 15 सालों से काकीनाडा में रह रहा है। सत्यनारायण के पिता रमेश राजू झींगा व्यापारी हैं और उनकी मां राखी गृहिणी हैं। खास बात ये है कि राजू के छोटे भाई पांडुरंग राजू भी क्रिकेटर हैं। सत्यनारायण राजू क्रिकेट के साथ- साथ पढ़ाई में भी आगे रहे हैं।

आरोन फिंच ने कहा, कोहली हैं ना, इसलिए आक्रामक बल्लेबाजी करते हैं रोहित

मुंबई (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान आरोन फिंच का मानना है कि टीम इंडिया के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली के पास किसी भी युवा टी20 स्टार की तरह बेहतर स्ट्राइक-रेट से रन बनाने की कला है, लेकिन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की टीम का कॉम्बिनेशन ऐसा है कि उन्हें बिना जोखिम के बड़ा स्कोर खड़ा करने पर ध्यान देना होगा। फिंच ने कहा कि रोहित शर्मा जैसे खिलाड़ी लगातार अधिक जोखिम भरा क्रिकेट खेल रहे हैं। कोहली हालांकि 2023 में 140 और 2024 में 154.70 के स्ट्राइक रेट से 741 रन बनाकर धीमी बल्लेबाजी करने का मिथक तोड़ने में सफल साबित हुए हैं। फिंच से पूछा गया कि क्या कोहली को आरसीबी को पूरा फायदा दिलाने के लिए अपने खेल में बदलाव करने की जरूरत है। इस पर पूर्व खिलाड़ी ने कहा, ''मेरा सवाल यह है कि आप कोहली से (आईपीएल) सत्र में 700 या 800 रन देखना

चाहते हैं या आप उनसे 400 रन से खुश रहने वाले हैं, अगर आप कोहली से अधिक स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी की उम्मीद करते हैं तब निरंतरता में कमी आयेगी। फिंच ने कहा, इसलिए मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई बहुत बड़ा बदलाव करने की जरूरत है। शायद यह गति को थोड़ा बदलने जैसा है। मुझे उससे बड़ी पारी की उम्मीद होगी। फिंच ने माना कि टीमों के पावरप्ले ओवरों को लेकर खेल में काफी बदलाव आया है, लेकिन हर बल्लेबाज की ताकत अलग है। उन्होंने कहा, यह सिर्फ उन खिलाड़ियों के बारे में नहीं है जो मैदान पर उतरते ही पहली गेंद से 200 की स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी करने की कोशिश करते है। मुझे लगता है कि एक ही टीम में सात बल्लेबाजों से ऐसा करने के लिए कहना अवास्तविक है। उन्होंने कहा, ''मुझे पता है कि पिछले दो सत्रों में खेल एक नए स्तर पर चला गया है। लेकिन आपको अभी भी मजबूत नींव तैयार करने की जरूरत होती है और आपको इसतरह के खिलाड़ी चाहिये जो पारी के अंत तक लगातार स्ट्राइक बदलने और बल्लेबाजी करने में सक्षम हो।'' भारत के वनडे और टेस्ट कप्तान रोहित शर्मा का आईपीएल स्ट्राइक रेट भी कोहली की तरह ही है, लेकिन उन्होंने पिछले कुछ सालों से अधिक आक्रामक रवैये के साथ बल्लेबाजी की है। फिंच ने रोहित के मामले को कोहली से अलग बताकर कहा कि जब आप रोहित के प्रदर्शन को देखते हैं, तब उसके आस-पास मौजूद खिलाड़ियों पर नजर डालें। उसके पास एक ऐसा खिलाड़ी है जिसके आस-पास टीम बल्लेबाजी कर सकती है।

इसके बाद उनके लिए शुरुआती ओवरों में ढेर सारे छक्के लगाना ठीक है। मुंबई इंडियंस की टीम में शीर्ष और मध्य क्रम में हार्दिक पंड्या, सूर्यकुमार यादव, तिलक वर्मा जैसे खिलाड़ी है। फिंच ने कहा कि रोहित भारत के लिए यह जोखिम उठा सकते है, क्योंकि टीम में उनके साथ कोहली भी है।

विराट कोहली ने पहनी 2.50 करोड़ रुपये कीमत की घड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाल ही में भारतीय क्रिकेटर विराट कोहली को कोलकाता में आईपीएल 2025 के लिए देखा गया। रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर की जर्सी पहने हुए शहर में एंट्री करते ही प्रशंसकों ने तुरंत उनकी घड़ी पर ध्यान दिया। विराट कोहली ने जो घड़ी पहनी थी, वह रोलेक्स डेटोना ले मैन्स 100वीं वर्षगांठ वाली वॉच थी।

इसकी कीमत लगभग 2.50 करोड़ रुपये है। इतनी कीमत में दिल्ली में आसानी से लग्जरी अपार्टमेंट खरीदा जा सकता है। विराट कोहली का महंगी घड़ियों का शौक किसी से छुपा नहीं है। इस बार भी उन्होंने सबको अपनी घड़ी से आकर्षित किया। वह हाल ही में आईपीएल 2025 के लिए कोलकाता में थे। उन्होंने रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर की जर्सी पहनी थी। लोगों ने उनकी शानदार घड़ी को तुरंत नोटिस किया। विराट कोहली ने जो घड़ी पहनी थी, वह रोलेक्स डेटोना थी। यह ले मैन्स की 100वीं वर्षगांठ के मौके पर बनाई गई विशेष घड़ी है। यह घड़ी अपनी सुंदरता और कारीगरी के लिए जानी जाती है। इसमें 18 कैरेट पीले सोने का केस है। इसके साथ ही, इसमें काले रंग का सिरेमिक बेजल भी है। इस घड़ी की कीमत भी इसकी सुंदरता के जैसी ही है। द इंडियन होरोलॉजी के अनुसार, इस घड़ी की खुदरा कीमत 47.59 लाख रुपये है। लेकिन, बाजार में इसकी कीमत 2.50

करोड़ रुपये तक जा सकती है। इस घड़ी में पॉल न्यूमैन स्टाइल के काउंटर हैं।

यह डायल पर बने हुए हैं। यह घड़ी बहुत टिकाऊ है। इसमें खरोंच से बचाने वाला नीलम क्रिस्टल लगा है। इसमें ट्रिपल वाटरप्रूफ प्रोटेक्शन के साथ एक स्क्रू-डाउन क्राउन भी है। घड़ी का डायल काले और सफेद रंग का है। इसमें चमकदार मार्कर हैं। इससे यह हर तरह की रोशनी में आसानी से दिखती है। इसमें 18 कैरेट सोने का ऑयस्टर ब्रेसलेट है। यह घड़ी को सुरक्षित और आरामदायक बनाता है। बता दें कि विराट कोहली क्रिकेट की दुनिया के बड़े नाम हैं। वह मैदान पर जितने जोरदार हैं, उनकी महंगी घड़ियों का कलेक्शन भी उतना ही शानदार है।

पुलिस थानों में भी नहीं होती सुनावाई, परेशान होकर जान देने को मजबूर हो रहे पीड़ित

जिले में सूदखोरों का फैला जाल, बड़ी संख्या में लोगों को बना रहे शिकार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर में सूदखोरी का धंधा चरम पर है। इनमें ज्यादातर बगैर लाइसेंस के ब्याज पर रुपए देने का धंधा करते हैं। इतना ही नहीं लाइसेंसी मनीलेंडर (उधार देने वाले) भी नियमों को ताक पर रखकर वसूली करते हैं। ये लोग छोटे कर्मचारियों, मजदूरों, ठेला लगाने वाले लोगों की मजबूरी का फायदा उठाकर मोटे ब्याज पर कर्ज देते हैं। इसके बाद अपनी मर्जी से चक्रवृद्धि ब्याज वसूलते हैं। जिसके एवज में कोरा चेक बतौर गारंटी लेते हैं यदि समय पर ब्याज मिलती रही तो ठीक है नहीं तो मनचाही रकम भर कर चेक बैंक में लगा कर उस खाते में पैसा नहीं होने पर सीधे वकील के माध्यम से नोटिस भेज कर दवाव बनाने का प्रयास किया जाता है, जब बात नहीं बनती तो न्यायालय में प्रकरण दर्ज करा दिया जाता है जिससे मजबूर होकर समझौता करना पड़ता हैं।

जिले में सक्रिय है पुरवार ग्रुप: राधे फाइनेंस तथाकथित कम्पनी के नाम पर पहले पैसे देता है फिर कुछ दिन बाद सूदखोर ब्याज में ली रकम वापस मांगने के लिए धमकाने के साथ मारपीट पर उतारू हो जाते हैं।

हाल ही में चोरहटा थाना क्षेत्र में मामला प्रकाश में आया था। जहां हरीश गुप्ता के घर पर पथराव की घटना को सूदखोरों द्वारा अंजाम दिया गया था, जिसमें चोरहटा थाना में मामला पंजीबद्ध किया गया था। इसके पूर्व अमहिया थाने में तथाकथित कम्पनी के मालिक राजेश पुरवार पर अपराध दर्ज करने आवेदन किया था। जिस पर पुलिस ने कर्जा एक्ट और धारा 384 के तहत मामला पंजीबद्ध किया था।

सूदखोरी में ये है शामिल: जिले के लोग बताते हैं कि सूदखोरी के इस खेल में कई लोग अपनी अलग-अलग भूमिका निभाते हैं। पैसे देने का काम कम्पनी का मालिक करता है। जबकि ब्याज और वसूली का काम उसी का कर्मचारी इन्दर कुशवाहा करता है। जब कोई व्यक्ति ब्याज की राशि समय में नहीं पहुँचता है तो उसका चेक किसी अनीता या अन्य के माध्यम से लगवा दिया जाता है जिसपर भरी भरकम राशि भरी जाती है। इस तरह इनके जाल में फंसकर न जाने कितनों ने आत्महत्या कर ली और न जाने कितने शहर छोड़ कर चले गए। आये दिन लोग इन सूदखोरों का शिकार हो रहे हैं।

शासकीय कर्मचारी भी इसी कर्ज से त्रस्त: शासकीय कर्मचारी भी मोटे ब्याज दर पर कर्ज लेते हैं। वहीं बताते हैं कि पुरवार और शहर के अन्य सूदखोरों को कर्ज के एवज में अधिक ब्याज देना पड़ता है। शासकीय कर्मचारी ही बताते हैं कि कई शासकीयकर्मी बच्चों की पढ़ाई, शादी या अन्य कार्यों के लिए 10-12 फीसदी मासिक ब्याज की दर पर उधार लेते हैं। शासकीय विभाग में होकर भी सूदखोरों की शर्तों से ऐसे घिरे होते हैं कि ब्याज देते रहते हैं लेकिन मूलधन जस का तस बना रहता है।

क्या कहता है कानून: मध्यप्रदेश के लिए बना मनी लेंडिंग एक्ट 1934 ही छत्तीसगढ़ में प्रभावी है। इसमें 2010 में मामूली संशोधन किया गया। वसूली की शिकायत मिलने के बाद आईपीसी की धारा 384 की तहत कार्रवाई की जाती है। इसमें सजा का प्रावधान भी है।

पूर्व सरपंच के ऊपर लगे सूदखोरी के आरोप

केस 1

एक परिवार रायपुर थाने में सूदखोरी की शिकायत करने गया था। मुकेश नाम के युवक ने बताया कि घर की जरूरत पड़ने पर एक लाख कर्ज लिया था। कर्ज को पटाने के लिए हमने कई प्रयास किए । जिसके बाद 72000 रुपए दे चुका हूँ, लेकिन सूदखोर पूर्व सरपंच युसुफ द्वारा 561 000 रूपये की मांग की जा रही है। रकम ना देने की स्थिति में जान से मारने तक की धमकी देता है साथ ही चेक बिक्री करने की धमकी देता है जिसकी शिकायत रायपुर थाने में करनी चाही लेकिन थाना प्रभारी रायपुर कर्चुलियान ने शिकायत नहीं सुनी। अब कैसे इंसाफ मिलेगा।

केस 2 .

रीवा के रहने वाले हिमांशु मिश्रा ने बताया कि मेरे द्वारा थाना अमहिया में आवेदन किया किया गया है, मैं वर्ष 2024 में इंदौर चला गया था। प्रवीण से इंदौर में रहने के दौरान कुछ पैसे का लेन देन किया था जब वापस आया तो प्रवीण को ओनलाइन पैसे देने को कहा तो प्रवीण ने नगद 75000 लिया और मेरा एक चेक वापस कर दूसरा चेक गुम जाने की बात कही कुछ दिन बाद मुझसे एक लाख रुपए प्रवीण मांगने लगा। कहा कि तुम्हारा एक चेक अभी भी हमारे पास है पैसा दो नहीं तो चेक लगा कर पैसा ले लूँगा जिसकी शिकायत मेरे द्वारा अमहिया थाने में की गई है।

गौरव राजपूत बने रीवा आईजी, डी आईजी को भी बदला

रीवा जोन के नवागत IG गौरव राजपूत

रीवा रेंज के नवागत DIG राजेश सिंह चंदेल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा रेंज में आने वाले मऊगंज जिले में हुई हिंसक घटना में ए एसआई की हत्या के बाद पुलिस प्रशासन में बड़े बदलाव किया गए हैं। दो दिन पहले ही मऊगंज के एसपी को हटाया गया था और अब डी आईजी, रीवा रेंज साकेत प्रकाश पांडे को भी हटा दिया गया है। उन्हें डी आईजी, पीएचक्यू में पदस्थ किया गया है। उनके स्थान पर राजेश सिंह को रीवा रेंज का डी आईजी बनाया गया है। बतादें कि राजेश सिंह के पास अभी डी आईजी, सेनानी 25वीं वाहिनी, विसबल भोपाल की जिम्मेदारी है। वहीं लम्बे समय से खाली पड़ी आईजी की कुर्सी पर गौरव राजपूत को पदस्थ किया गया है। बतादें कि गौरव राजपूत के पास अभी ओ एसडी, गृह विभाग की जिम्मेदारी थी।

युवती के साथ झाड़-फूंक के नाम पर तांत्रिक ने किया गलत काम

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सोहागी थाना क्षेत्र में एक युवती के साथ झाड़-फूंक के नाम पर गलत काम किये जाने का मामला सामने आया है।बीमार युवती को प्रेत बाधा से ग्रस्त बताकर झाड़-फूंक करने के बहाने तांत्रिक ने घरवालों को अपने झांसे में लिया और फिर मौका पाकर युवती के साथ ग़लत काम किया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया है। जानकारी के मुताबिक 20 वर्षीय पीड़िता को परिजन समर उर्फ समरेंद्र नाम के तांत्रिक के पास ले गए थे। जहां आरोपी तांत्रिक ने युवती को ठीक करने का दावा करते हुए उनके घर आकर तंत्र-मंत्र करने की बात कही। घर पहुंचते ही तांत्रिक ने एक चूने का बड़ा गोला बनाकर परिजनों को उसमें बैठा दिया और कहा कि यदि वे बाहर निकले तो प्रेत बाधा की चपेट में आ जाएंगे। इसके बाद उसने झाड़-फूंक के बहाने युवती को अलग कमरे में ले जाकर दुष्कृत्य किया। पीड़िता ने जब अपने साथ हुई ज़्यादती की जानकारी परिजनों को दी, तो वे उसे लेकर सोहागी थाना पहुंचे और पुलिस में शिकायत दर्ज कराई।

देर रात मदरसे से एक घंटे के अंदर हो गई लाखों रुपये की चोरी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र में लाखों रुपए का कैश चोरी हो गया। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू कर दी है। घटना स्थल पर आरोपियों ने न कोई ताला तोड़ा और न ही कोई आवाज़ हुई और एक घंटे के अंदर चोरी की घटना को अंजाम देकर आरोपी करीब 6 लाख रुपये लेकर फरार हो गए। दरअसल ये घटना पचमठा चौराहे के समीप की है। जहां कई वर्षों से संचालित एक मदरसे में बीती रात चोरी की घटना को अंजाम दिया गया। मदरसा संचालक रेहान रज़ा नूरी ने बताया कि रमज़ान के महीने में काफी लोग यतीम बच्चों के लिए मदद करते हैं। जिसका पैसा रखा हुआ था। रात करीब 3 बजे तक कोई घटना नहीं हुई थी इसके बाद तड़के 4 बजे पता चला कि कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ है और अलमारी से रुपए भी चोरी हो गए। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने मौके का निरीक्षण किया साथ ही फॉरेंसिक की टीम को भी बुलाया गया। बताया जा रहा है कि जिस स्थान पर वारदात हुई है, उसके मेन गेट का ताला नहीं खोला गया और अंदर जाने का दूसरा कोई रास्ता भी नहीं है इसके बाद चोरी की घटना हो गई।

प्रधान आरक्षक की सेवा समाप्त, रायपुर कर्चुलियान में था पदस्थ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में एक प्रधान आरक्षक की सेवा समाप्त कर दी गई है। प्रधान आरक्षक बुद्धसेन सूर्यवंशी रायपुर कर्चुलियान में पदस्थ था। साल 2019 में भ्रष्टाचार अधिनियम के तहत कार्रवाई की गई थी। मामला न्यायालय में चल रहा था। जिसमें वो आरोपी सिद्ध हुआ।

एडिशनल एसपी विवेक लाल ने बताया कि कायमी के बाद अपराध सिद्ध पाए जाने पर न्यायालय में चालान पेश किया गया है। न्यायालय में प्रकरण की सुनवाई के दौरान आरोपी प्रधान आरक्षक को 4 वर्ष के कारावास और 1000 के अर्थदंड से न्यायालय के द्वारा दंडित किया गया है। चालान पेश करने के पहले ही पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह ने आरोपी प्रधान आरक्षक को बर्खास्त कर दिया है। चालान पेश होने के बाद न्यायालय ने भी पूरे मामले भी सख्ती दिखाते हुए कठोर सजा सुनाई है। लगातार भ्रष्टाचार के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जा रही है।

बिना परमिशन ही रेत और गिट्टी का अवैध भंडारण कर रहे माफिया, कुंभकर्णी निद्रा में लीन प्रशासनिक अमला

ट्रेडर्स संचालकों ने शासकीय ज़मीनों में बेजा कब्जा कर बनाया डंपिंग प्वाइंट

रिंग रोड में चल रही रेत मंडी पर भी नहीं दिखती प्रशासन की सख्ती

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। नगर निगम रीवा का चोरहटा से रतहरा करीब 15 किलोमीटर का यह एरिया इन दिनों इस तरह के भूमाफियाओं के कब्जे पर है जो रसूख के चलते वहां पर मनमानी तरीके से अवैध गतिविधियों को संचालित करते हैं। मगर प्रशासनिक अमला खुद ऐसे माफियाओं से बचे रहने के लिए रहम की भीख मांगता रहता है। और सरकारी मेहरबानी के चलते माफियाओं ने अपना कद ऊंचा कर ट्रेडर्स की दुकानें खोलते हुए शासन की जमीनों में ही रेत और गिट्टी का भंडारण करना शुरू कर दिया। इतना ही नहीं कई अन्य लोग तो मुरूम तक का अवैध भंडारण कर सरकारी विभागों को खुली चुनौती दे रहे हैं परंतु खनिज, आरटीओ, राजस्व, विभाग के साथ ही नगर निगम की टीम डरी सहमी सी कार्यवाही से बचती रहती है। सरकारी विभागों की माफियाओं पर यह मेहरबानी महज चंद रुपए के लालच पर ही सीमित रह गई है जिससे यह माफिया अपनी चांदी काट रहे हैं।

दरअसल शहर के 15 किलोमीटर एरिया में करीब 50 से ज्यादा ऐसे चिन्हित स्थान हैं जहां पर माफियाओं की इस प्रकार तूती बोलती हैं कि अब कहना ही क्या और अपनी उसी रसूखबाजी से वह अवैध कामों में तेजी लाते जा रहे हैं। भूमाफियाओं ने शहर के अधिकांश इलाकों में ट्रेडर्स शॉप डालकर रेत, गिट्टी सहित मुरूम के भंडारण का अड्डा बनाया हुआ है और कागजी परमिशन के नाम पर उनके पास फलाने अधिकारी और ढ़ेकाने नेता का फोन होता है।

बताया जा रहा है कि भूमाफियाओं ने शहर के ट्रांसपोर्ट नगर इलाके और रतहरा बाईपास को इस तरह से अपने चंगुल में कैद कर रखा है कि वहां यह ट्रेडर्स की दुकान खोल किसी भी सामग्री का भंडारण कर ले उन्हें बोलने वाला कोई भी नहीं है। स्थानीय लोग कहते हैं कि इस तरह की अवैध गतिविधि को रोकने कई बार उन्होंने प्रशासन को अवगत भी कराया लेकिन कार्यवाही को आने से पहले ही अधिकारियों के पास मोटी रकम का लिफाफा पहुंच जाता है जिससे इन माफियाओं को कोई तकलीफ नहीं होती।

आपको बता दें भू माफियाओं के द्वारा रीवा नगर निगम के भीतर कई एकड़ की जमीनों पर अवैध कब्जा किया गया है मगर प्रशासनिक अनदेखी के चलते कार्यवाही नहीं हो पा रही है। वही ट्रेडर्स संचालकों के द्वारा शासकीय जमीन पर अवैध रूप से कब्जा कर बालू और गिट्टी का डंपिंग पॉइंट बनाया जा रहा है वहीं रीवा जिले भर के भीतर भी भू माफियाओं की ऐसी सक्रियता है कि उनके द्वारा तकरीबन 10 हजार एकड़ से अधिक जमीनों पर अवैध रूप से कब्जा किया गया है परंतु प्रशासन के द्वारा इस पर किसी भी प्रकार की कार्यवाही नहीं की जा रही है जिसके कारण माफियाओं के हौसले बुलंदी पर है।

लिव-इन में रह रही किशोरी की जलने से संदिग्ध मौत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज जिले के मलकपुर गांव में एक 17 वर्षीय किशोरी की आग से जलने के कारण संदिग्ध परिस्थितियों में एसजीएमएच रीवा में मौत हो गई। किशोरी करीब एक वर्ष पूर्व अपने पुरुष दोस्त के साथ उसके घर मलकपुर चली गई थी और वहां रह रही थी। घटना के संबध में मृतिका के पिता राजेश कोल निवासी ग्राम बहरवा थाना कमर्जी जिला सीधी ने बताया कि वो महाराष्ट्र में एक निजी कंपनी में काम करते हैं। उन्होंने बताया कि, एक वर्ष पूर्व उनकी बेटी अपने दोस्त के साथ उसके घर मलकपुर मऊगंज चली गई थी, तब से वो वहीं रह रही थी। राजेश ने बताया कि एक सप्ताह पूर्व उन्हें सूचना मिली कि उनकी बेटी आग से जल गई है जिसके बाद वो रीवा आए, जहां बीती रात उपचार के दौरान उनकी बेटी का निधन हो गया। राजेश ने बताया कि ये घटना कैसे हुई अभी इसकी जानकारी नहीं है। फ़िलहाल पुलिस इस पूरे मामले में मर्ग कायम कर जांच कर रही है।

बहू और सास से पड़ोस में रहने वाले पिता और पुत्र ने की मारपीट

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा शहर के बिछिया थाना क्षेत्र अंतर्गत लोही गांव में बहू और सास के पड़ोस में रहने वाले पिता और पुत्र ने लाठी-डंडे से हमला कर दिया। जिससे दोनों घायल हो गईं। घटना के संबंध में घायल बहू शकुंतला कोल ने बताया कि पड़ोस में रहने वाले तीरथ कोल और उनका बेटा करण कोल बीती रात उसके घर में घुसे और लाठी-डंडे से मारने लगे, इस दौरान उसकी चाची सास जब उसे बचाने आईं तो उनके साथ भी मारपीट की गई।

शकुंतला के मुताबिक तीरथ और करण उसके ऊपर ग़लत आरोप लगाते हैं और जब वो विरोध करती है तो उसके साथ मारपीट करते हैं। फिलहाल मामले की शिकायत बिछिया थाने में दर्ज करा दी गई है। पुलिस ने घायल महिला का उपचार कराया है।

शाला जाने योग्य हर बच्चे का शाला में प्रवेश कराने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। आगामी एक अप्रैल से स्कूल शिक्षा विभाग का वर्ष 2025-26 का नया शिक्षा सत्र आरंभ हो रहा है। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने शासकीय स्कूलों में नवीन शिक्षा सत्र के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के लिए आदेश जारी किए हैं। कलेक्टर ने कहा है कि जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला समन्वयक शिक्षा मिशन को नवीन शिक्षा सत्र के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। शाला जाने योग्य प्रत्येक बच्चे का शाला में अनिवार्य रूप से प्रवेश कराएं। अब तक कक्षा दो से लेकर कक्षा 11 तक जो विद्यार्थी दर्ज हैं उनका पूरा विवरण समग्र शिक्षा पोर्टल पर 31 मार्च तक अनिवार्य रूप से अपडेट कराएं। विकासखण्ड स्तर पर विद्यार्थियों एवं पालकों के साथ बैठक आयोजित करके एक अप्रैल से नवीन शिक्षा सत्र शुरू होने की जानकारी दें। स्थानीय संचार माध्यमों से भी इसका व्यापक प्रचार-प्रसार कराएं। शाला जाने योग्य प्रत्येक बच्चे का शाला में प्रवेश सुनिश्चित करने के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं तथा आमजनता का भी पूरा सहयोग लें।

कलेक्टर ने नरवाई जलाने पर धारा 163 के तहत दिए प्रतिबंध के आदेश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले में कृषकों तथा पशुपालकों को भूसे की उपलब्धता सुनिश्चित कराने तथा गर्मियों में होने वाली आग की दुर्घटनाओं को नियंत्रित करने के लिये कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती प्रतिभा पाल ने नरवाई जलाने पर प्रतिबंध के आदेश दिए हैं। यह आदेश सम्पूर्ण रीवा जिले में 17 मार्च से लागू हो गया है। यह आदेश भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 के तहत जारी किए गए हैं। प्रतिबंध का उल्लंघन करके नरवाई जलाने पर दो एकड़ से कम जमीन वाले किसानों पर 2500 रुपए, दो से पाँच एकड़ तक के किसानों पर 5000 रुपए तथा पाँच एकड़ से अधिक जमीन वाले किसानों पर 15000 रुपए का जुर्माना लगाया जाएगा। साथ ही भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 223 के तहत प्रकरण दर्ज कर दण्डात्मक कार्यवाही की जाएगी। वर्तमान परिस्थितियों में आदेश की व्यक्तिशः तामीली संभव नहीं है इसलिए भारतीय नागरिक संहिता की 2023 धारा 163 (2) के तहत आदेश एक पक्षीय रूप से पारित किया जा रहा है। विभिन्न संचार माध्यमों से इसकी सूचना आमजनता को दी जा रही है।

समाधान ऑनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं के सभी आवेदन निराकृत करने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने टीएल पत्रों तथा सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की। कलेक्टर ने फरवरी माह की ग्रेडिंग में आठ विभागों के डी श्रेणी तथा तीन विभागों के सी श्रेणी में रहने पर नाराजगी व्यक्त की। कलेक्टर ने कहा कि सभी संबंधित अधिकारी एक सप्ताह में लंबित प्रकरणों का निराकरण करके विभाग को डी और सी श्रेणी से बाहर लाएं। सीएम हेल्पलाइन में 50 दिवस से अधिक समय से लंबित सभी प्रकरण सात दिवस में निराकृत करें। विभागों की रैंकिंग में गिरावट आई तो संबंधित अधिकारियों के विरूद्ध कार्यवाही की जाएगी। सभी अधिकारी समाधान ऑनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं में लंबित सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों का भी तत्काल निराकरण करें। इसमें हैण्डपंपों के सुधार, मनरेगा में मजदूरी भुगतान के प्रकरण प्राथमिकता से निराकृत करें। कार्यपालन यंत्री पीएचई अभियान चलाकर बिगड़े हैण्डपंपों का सुधार कराएं। पेयजल संबंधी विकासखण्ड स्तरीय और जिला स्तरीय कंट्रोल रूम में हैण्डपंप और नलजल योजना के सुधार के संबंध में प्राप्त सूचनाओं पर तत्काल कार्यवाही करें। बैठक में कलेक्टर ने कहा कि जल संसाधन विभाग, ट्राईबल विभाग, स्वास्थ्य विभाग, श्रम विभाग, लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग तथा खाद्य विभाग में बड़ी संख्या में आवेदन पत्र लंबित हैं। इनका इसी सप्ताह निराकरण कराएं। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रम विभाग जन्म-मृत्यु पंजीयन तथा ग्रामीण विकास विभाग के लंबित सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण के लिए विकासखण्डवार शिविर लगाएं। इसमें लापरवाही बरतने वाले ग्राम पंचायत सचिवों तथा ग्राम रोजगार सहायकों पर कार्यवाही करें। सभी एसडीएम प्राकृतिक आपदा में राहत राशि, भू अर्जन तथा सीमांकन में लंबित सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण के लिए तहसीलवार शिविर लगाएं। तहसीलदार एवं पटवारियों से प्रतिवेदन प्राप्त कर प्रकरणों में समुचित उत्तर दर्ज करें। राजस्व विभाग में 50 दिन से अधिक समय से लंबित सभी शिकायतों का सात दिवस में निराकरण करें। सीएम हेल्पलाइन में यदि कोई शिकायत अनअटेंडेड पाई गई तो संबंधित एल-1 अधिकारी के विरूद्ध कड़ी अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

बैठक में कलेक्टर ने कहा कि महाप्रबंधक सहकारी बैंक तथा जिला आपूर्ति अधिकारी गेंहू उपार्जन केन्द्रों में गेंहू खरीदी के लिए सभी सुविधाएं सुनिश्चित करें। पंजीकृत किसानों को उपार्जन के लिए स्लॉट बुकिंग की सुविधा तत्काल शुरू कर दें। जिला प्रबंधक नागरिक आपूर्ति निगम दो दिवस में सभी खरीदी केन्द्रों में पर्याप्त मात्रा में बारदाने उपलब्ध करा दें तथा कृषि उपज मण्डी को लंबित राशि का भुगतान करें। खाद्य सुरक्षा योजना से लाभान्वित सभी हितग्राहियों की 31 मार्च से पूर्व शत-प्रतिशत ई केवाईसी कराकर प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।

लिफ्ट देने के बहाने कार में सेना के रिटायर्ड कैप्टन से की लूट

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज में सेना के रिटायर्ड कैप्टन से लूट की घटना सामने आई है। बदमाशों ने पहले पीड़ित को चाचा बोलकर गाड़ी में बैठाया फिर लिफ्ट देने के बहाने जेब में रखे 10 हज़ार रुपये निकालकर चंपत हो गए। पीड़ित ने इस घटना की शिकायत थाने में दर्ज करवाई है। जिस पर पुलिस ने बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है। मऊगंज थाने के पन्नी गांव निवासी लक्ष्मी नारायण मिश्रा सेना के रिटायर्ड कैप्टन हैं वे मऊगंज स्थित इंडियन बैंक में रुपए निकालने के लिए सोमवार को आए हुए थे खाते से 10 हज़ार रुपये निकालकर वे पैदल अपने घर वापस जा रहे थे, जैसे ही मस्जिद के समीप पहुंचे तभी पीछे से कार में सवार होकर बदमाश वहां पहुंच गए। बदमाशों ने उनसे चाचा प्रणाम करके बोला और बाद में घर तक छोड़ने के बहाने उनको गाड़ी में बैठा लिया। उनके नापाक इरादों से बेखबर वृद्ध गाड़ी में बैठ गए। इस दौरान बदमाशों ने बड़ी सफाई से उनकी जेब में रखे रुपये निकाल लिए और बाद में उनको बीच रास्ते में उतार कर बदमाश भागने लगे। पीड़ित को संदेह हुआ तो उन्होंने जेब चेक किया जहां रुपए ग़ायब थे। उन्होंने गाड़ी में बैठे बदमाश को पकड़ने का प्रयास किया लेकिन तभी वे तेज़ रफ्तार से गाड़ी भगाकर मौके से फरार हो गए।

युवा संगम कार्यक्रम में रोजगार के अवसर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला मुख्यालय स्थित टीआरएस कॉलेज में युवा संगम का आयोजन 25 मार्च को प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक किया गया है। युवा संगम कार्यक्रम के तहत आयोजित मेगा जॉब फेयर में जिले के बेरोजगार युवक-युवतियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने मेगा जॉब फेयर के सफल आयोजन के लिए विभिन्न विभागीय अधिकारियों को दायित्व सौंपे हैं। इस संबंध में उप संचालक रोजगार अनिल दुबे ने बताया कि रोजगार मेले में 40 कंपनियों एवं नियोजकों द्वारा युवाओं का चयन किया जाएगा। मेले में शामिल होने के लिए विभिन्न कंपनियों हेतु युवक एवं युवतियों की आयु सीमा 18 से 45 वर्ष के बीच निर्धारित की गई है। आयु सीमा विभिन्न कंपनियों में अलग-अलग होगी।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।